श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख ● पूर्ण अंक २१० अंक ● जनवरी-२०२५

Volume no. 18, Issue No. 210 January 2025

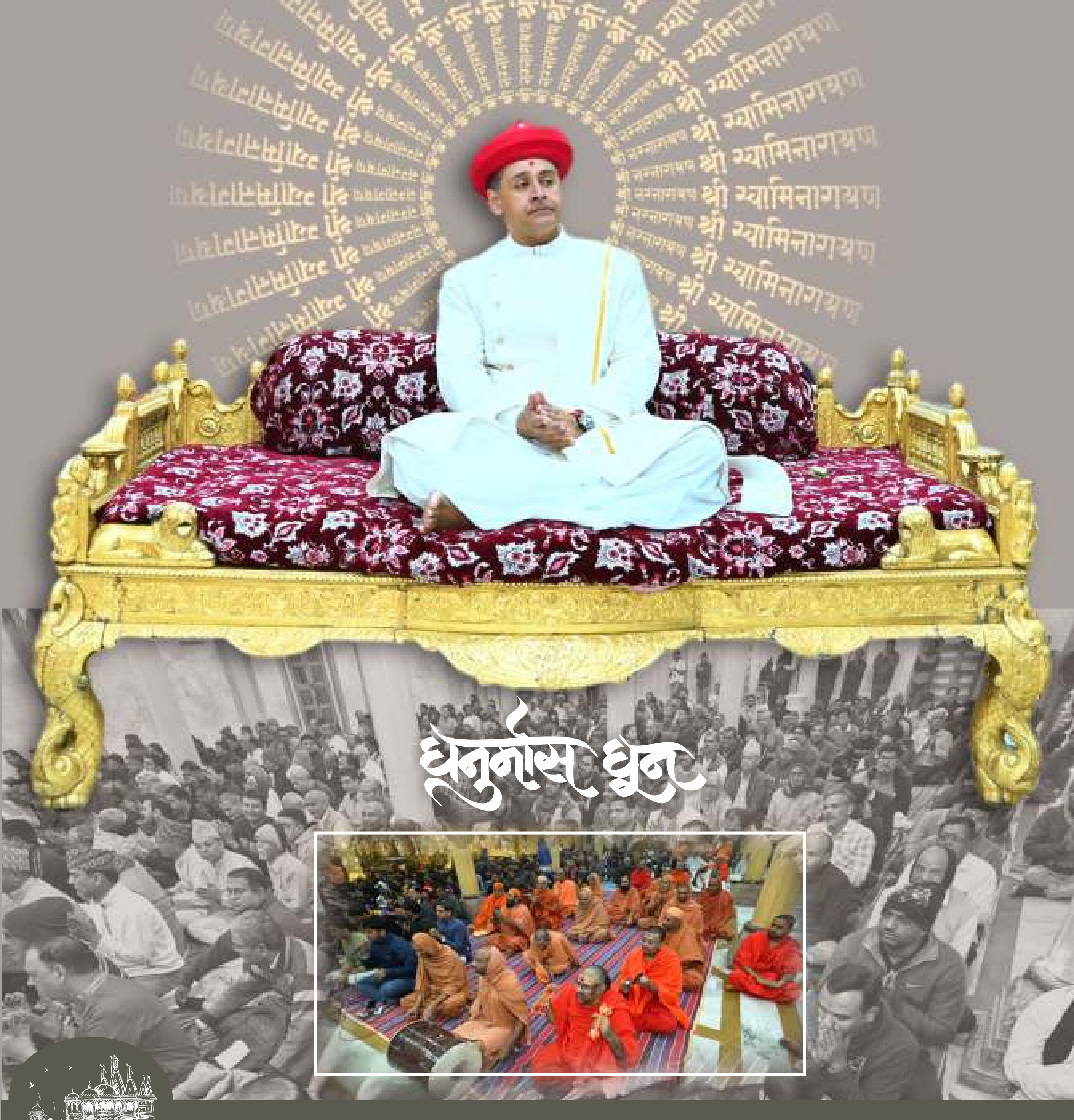

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१. Publisher: Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad- 380001 Rs.5/-

फोटडी (कच्छ) बहनो के नये मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते
प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा सभा को आशीर्वाद देते
प.पू. लालजी महाराजश्री और
प.पू. गादीवालाश्री के सानिध्य में शोभायात्रा

भारापर (कच्छ) नये मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा की अन्नकूट आरती उतारते
प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

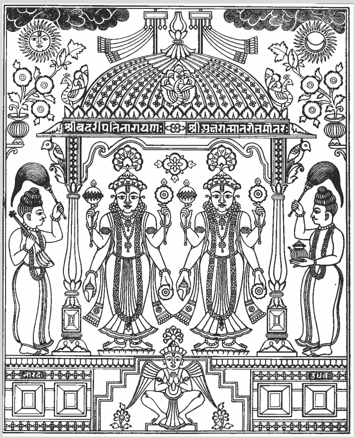

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७, २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी
(महंत स्वामी)
मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail :
magazine@swaminarayan.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १८ ● अंक : २१० ● जनवरी-२०२५

अ नु क्र म णि का

०१. अस्मदीयम् ०४

०२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा ०५

०३. व्रत में नमक ०६

०४. श्रीहरि के ७ वे और ८ वे वंशज के मुख से आर्शीवचन ०७

०५. मूर्ति, मनोहर महाराज की ११

०६. सच्छास्त्र १२

०७. कारीयाणी के मालिक मांचा खाचर १३

०८. अपने हरि मंदिर तथा प्रसादी के स्थल (सादरा-वासणा देश) १४

०९. श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से २०

१०. भक्ति सुधा २१

११. सत्संग समाचार २४

अस्मदीयम्

प्रिय भक्तगण

व्यापारियो का व्यापार का सीजन होता है । उसी प्रकार साधक-मुमुक्षुओ का भजन-भक्ति का सीजन होता है । धनुर्मास में दूसरे काम छोडकर भक्ति-भजन कर लेना चाहिए ।

भगवान श्री नरनारायणदेव बद्रिकाश्रम में रहकर भक्तो पर दया करने तथा अनुग्रह करने के लिये तपस्या करते है ।

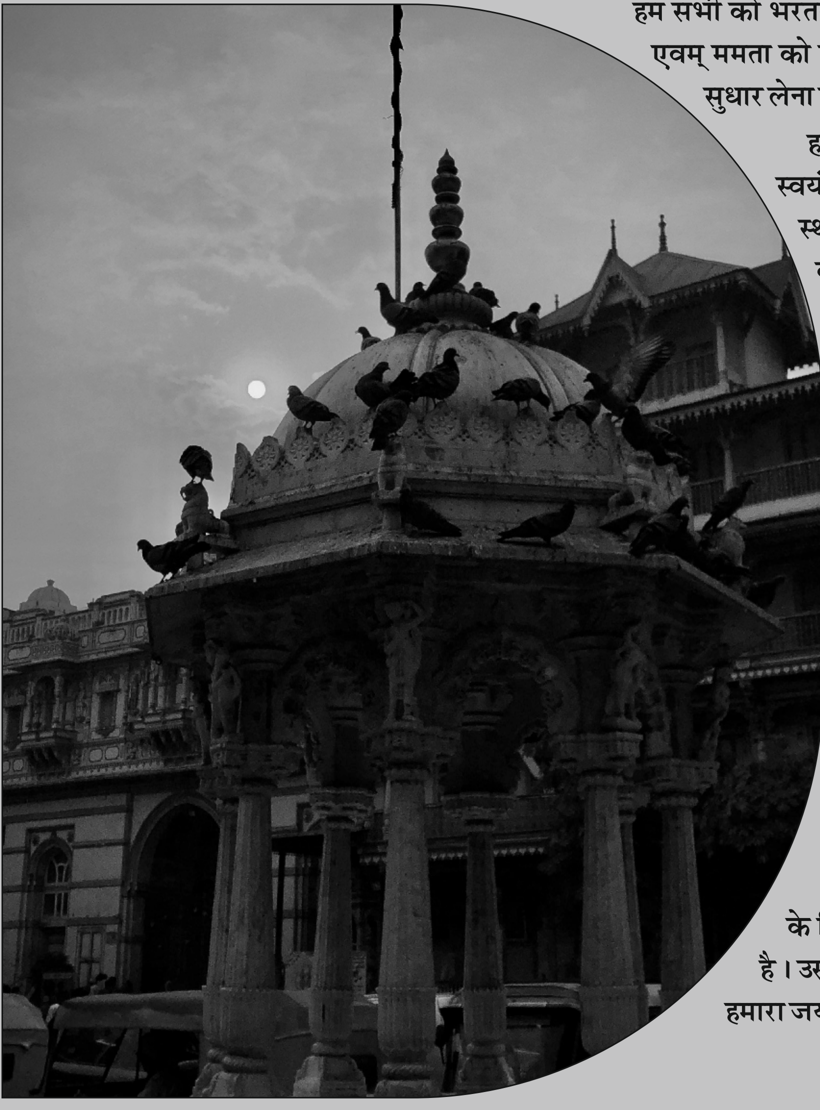

हम सभी को भरतखंड में जन्म मिला है । तो शरीर के अहंकार एवम् ममता को छोडकर, संसार की माया छोडकर मोक्ष को सुधार लेना चाहिए ।

हम लोग कौन सा पुण्य किये है कि श्रीहरि ने स्वयं इस श्रीनगर में श्री नरनारायणदेव को स्थापित किये । उनके समक्ष भजन-भक्ति करने की सुविधा दिये है । वहाँ पर धनुर्मास में प्रातः देव के सानिध्य में भजन-भक्ति का लाभ न ले तो, अमृत कलश का त्याग करके जहर का पात्र ग्रहण करे । ऐसा तो नही लगता ?

भजन करेगे भक्ति करेगे तो हमें भगवान की प्रीति प्राप्त होगी । हृदय में अंतर्यामी भगवान का अखंड भजन होगा । यह बड़ी उपलब्धि होगी ।

इस प्रकार देखे तो श्रीहरि की उपासना करने में कौन सा अधिक परिश्रम है । कुछ भी नही है ।

एक बार में यह समझ में आ जाये कि शुद्ध भक्ति से श्रीहरि खुश होते है ।

यह मानव शरीर मिला है । तो सफल होने के लिये महाराज हम सब पर कृपा करके बताये है । उस रास्ते पर चले मोक्ष कहाँ पर है ? सभी को हमारा जयश्री स्वामिनारायण ।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कार्यक्रम की रुपरेखा

(दिसम्बर-२०२४)

३ श्री स्वामिनारायण मंदिर मेडजीका मुवाडा रजत जयंती पाटोत्सव के अवसर पर पधारना ।

५-६ श्री स्वामिनारायण मंदिर फोटडी (कच्छ) (बहेनो का) मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना ।

८ श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (से-२) रजत जयंती महोत्सव के अवसर पर पधारना ।

९ कलोल पंचवटी श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव के अवसर पर पधारना ।

१० श्री स्वामिनारायण मंदिर वडु रजत जयंती पाटोत्सव के अवसर पर पधारना ।

१२ श्री स्वामिनारायण मंदिर वालम (विसनगर) पुनः मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना ।

१२-१३ श्री स्वामिनारायण मंदिर भारापर (कच्छ) मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना ।

१४ भुज श्री स्वामिनारायण मंदिर कथा के अवसर पर पधारना ।

१७ श्री स्वामिनारायण मंदिर ओला, ईसंड पाटोत्सव - शाकोत्सव के अवसर पर पधारना ।

१८-१९ मांडवी श्री स्वामिनारायण मंदिर कथा के अवसर पर पधारना ।

२० श्री स्वामिनारायण मंदिर शियाणी (मूली प्रदेश) पाटोत्सव के अवसर पर पधारना ।

२१ धनुर्मास धुन के अवसर पर कालुपुर मंदिर पधारना ।

२१-२६ ईस्ट आफ्रिका सत्संग स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना ।

२९ श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (से-२३) हरि स्मरण महोत्सव के अवसर पर पधारना ।

३० गुलाबपुरा गाँव में प.भ. गांडाभाई कालीदास पटेल परिवार का जीवन अमृत पर्व-कथा के अवसर पर पधारना ।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(नवेम्बर-२०२४)

१० श्री स्वामिनारायण मंदिर महेसाणा खीचडी उत्सव के अवसर पर पधारना ।

(दिसम्बर-२०२४)

२ श्री स्वामिनारायण मंदिर धमासणा पाटोत्सव के अवसर पर पधारना ।

३ श्री स्वामिनारायण मंदिर नवा वाडज पाटोत्सव के अवसर पर पधारना ।

४ श्री स्वामिनारायण मंदिर रामगढ (मूली प्रदेश) मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना ।

५ श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (से-२) रजत जयंती महोत्सव के अवसर पर पधारना ।

६-७ श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहेनो का) फोटडी (कच्छ) मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना ।

८ श्री स्वामिनारायण मंदिर वडु रजत जयंती पाटोत्सव महोत्सव के अवसर पर पधारना ।

१५ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर पूनमनी सत्संग सभा के अवसर पर पधारना ।

२० श्री स्वामिनारायण मंदिर मोयद पाटोत्सव के अवसर पर पधारना ।

२२ अमदावाद थलतेज, शिलज, सायन्स सीटी युवक मंडल का स्नेह मिलन स्वयं के सानिध्य में पूर्ण किये ।

२६ श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (से-२३) हरि स्मरण महोत्सव के अवसर पर पधारना ।

२८ संतरामपुर युवक मंडल स्नेहमिलन के अवसर पर पधारना ।

दीर्धकालीन व्रत लेकर तपस्या करने मधुवन में पधारे । हजारो वर्ष बीत गये । श्री शिव तपस्या में लीन रहे ।

व्रत में नमक

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

दूसरे तरफ कैलास में जगदंबा पार्वती अकेली रह रही थी । उनके शरीर के दाहिनी भाग की मैल से एक पुत्र की उत्पत्ति किये । वह कैसे हुए ? जिसका हाथ, पैर, घुटना, छोटे अंग, चार भूजा, चौडा पेट, गले में घुग्घट माला, हाथ में जल कमंडल, मोदक, फरसी, जप माला ऐसे रुप वाले पुत्र गणेशजी पैदा हुए । माता पार्वतीने कहा, पुत्र तुम मेरी रक्षा करना । हमारे भवन में मनुष्य प्राणी कोई भी प्रवेश नही करे । इसके पश्चात जगदम्बा पार्वती बाये हाथ की मैल से पुत्री उत्पन्न की । उनका नाम ओखा रखा था । जिसके मांथे पर सिन्दूर, टिकली, राखी, कंकु हाथ में नाडा छडी (कलावा) अपने दोनो पुत्र-पुत्री से बोली मैं स्नान करने जा रही हूँ कोई प्रवेश नही करे।

इतने में नारदमुनि का आगमन कैलास में हुआ । दोनो बालको को देखकर पूछे आप लोग किसके संतान है ? बच्चे बोले, मुनिराज हम माता पार्वती के संतान है । मुनि विस्मय में हो गये । वहाँ से नारद मधुवन आ गये । तपस्या में लीन महादेव के चरणो की वंदना करके बोले हे महादेव आप यहाँ पर तपस्या कर रहे है । आप के घर पर तो उमियाजी दो संतान का जन्म दी है । यह सुनकर महादेव तुरंत कैलास आये । वहाँ पर अपने भवन द्वार पर हो बालक को बैठा देखे । शिवजी को घर में प्रवेश करते ही पुत्र गणेश ने रोका और बोले मेरी माँ अन्दर स्नान कर रही है । माता का आदेश है कि किसी को आने मत देना । शिव बोले ! अरे ! मैं महादेव हूँ । पुत्र बोले आप जो कुछ भी रहे मैं आने नही दूँगा । इसी समय गणेशजी एव महादेव के मध्य वाकयुद्द प्रारम्भ हो गया । बाद में शस्त्र युद्ध भी हुआ । भयंकर युद्ध त्रिलोक कांपने लगा । प्रलय का वातावरण हो गया । वहाँ पर बच्ची नमक के मटके में छिप गयी । भगवान शिव त्रिशुल द्वारा गणेश का सिर काट दिये । यह अवस्था देखकर वह बच्ची नमक के बर्तन में छिप गयी ।

भगवान शिव घर में आये । देवी पार्वती वस्त्र पहन रही थी । प्रभु बोले ! घर के दरवाजे पर दो बालक कौन है ? तभी देवी पार्वती बोली हे स्वामीनाथ ! आप बन में जाने से पहले वरदान दिये थे कि आप को दो संतान होगे । आप के इस संतानो को मैने बाये से पुत्री तथा दाहिने से पुत्र को जन्म दिया है । स्नान करने के समय हमने दरवाजे पर खडे रहने का आदेश दिये था ।

यह सुनकर महादेव का क्रोध शांत हुआ । पिता के हाथ से पुत्र का सिर काटा गया । इस कारण से शिव पर बडा कलंक लगा । भगवान शिव ने तुरंत नंदी गण को बुलाये और बोले कि जो पहले सामने मिले उसका सिर लेकर आओ । उन्हे रास्ते में एक दैवीय गजराज मिले । उनका सिर काटकर ले आये ।नंदी द्वार लाये गेय गज के सिर को गणेश के शरीर में लगाये । उनके ये पुत्र गजानन बने । और वरदान दिये आपकी सर्व प्रथम पूजा की

(पेईज नं. १९)

श्रीहरि के ७ वे और ८ वे वंशज के मुरव से
आर्शीवचन

– संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी–बापुनगर)

प.पू. लालजी महाराजश्री, श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर द्वार आयोजित श्री पूर्णेश्वर महादेव प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव और दूसरे वार्षिक पाटोत्सव के अवसर पर ता. २४-११-२०२४ : नरनारायणदेव सभी को प्राप्त हुए है। हम अपने भाग्यो को अच्छा समझे। की जन्मो के पुण्य कर्म के बाद इस सम्प्रदाय में विशेषकर अहमदाबाद देश के प्रत्येक हरिभक्त भाग्यशाली है। यह हमे वास्तव में सतयुग मिला है। उसके पीछे का कारण पूरे अहमदाबाद देश के संत और हरिभक्त आचार्य महाराजश्री की आज्ञा में रहकर, स्वामिनारायण भगवान ने जो सिद्धान्त दिये है। उसका पालन कर रहेहै।

इस समय ऐसा है कि सोश्यल मिडीया से लेकर संसार की भव्याति व्यवस्था देखकर सत्संग से दूर हो जाते है। स्वामिनारायण भगवान के द्वारा बताये गये सिद्धान्त का पालन करना अब कठिन हो गया है। क्योकि चारो तरफ से इतनी जानकारी आती है कि क्या माने क्या नही माने, क्या सत्य है ? इसमें अपने हरिभक्त तथा नवयुवक भ्रमित हो जाते है। इस समय हमें होने वाले सत्संग सभा, शाकोत्सव, पाटोत्सव इत्यादि का प्रबन्ध करते रहना चाहिए। जो हमे याद दिलाता है कि महाराज द्वारा प्रयत्न जड मे क्या है ? भगवान का बनकर रहे। सिद्धान्तो से जुडकर रहे। यही महाराज की आज्ञा है।

जो दो देश की गद्दी है। उसकी मर्यादा देश विभाग के लेख में महाराजने लिखा है। आप नरनारायणदेव अहमदाबाद देश के हरिभक्त हो या लक्ष्मीनारायणदेव वडताल देश के हरिभक्त हो, प्रत्येक हरिभक्त को देश विभाग लेख में, स्वामिनारायण भगवानने संविधान दिये है। उसी की सीमा में रहकर सत्संग करना है। आप जो जिस देश के नागरिक हो, कहाँ पर धर्मादा दे कहाँ पर नही देना है। कहाँ देना है वह देश विभाग लेख में स्पष्ट रुप से लिखा या है। व्यक्तिगत रुप से मै मानता हूँ कि शिक्षापत्री, वचनामृत आदि शास्त्र के बाद, देश विभाग के लेख का भी महत्व है। आज के समय में देश लेख को पढे। समझाये अति आवश्यक हो गया है। संत इस लेख का हर क्षेत्र में लेख का वर्णन वार्ता, कथा करते रहते है। आचार्य वंदना महोत्सव में कालुपुर मंदिर से बिना शुल्क के लेख प्रत्येक हरिभक्त के पास मिले। ऐसा प्रयास कियाग या है। इसको अवश्य पढे। आज के समय में संविधान का ज्ञान आवश्यक हो गया है। महाराज के आज्ञा मे नही रहने से दुःखी होना होगा। आज्ञा में रहने पर लोक–परलोक में सुख मिलेगा इसकी गारंटी है। इस लिये सिद्धान्तो का पालन करना चाहिए। स्वाभिमान वाला सत्संग करे। ऐसा–वैसा सत्संग नही रखे। यह भी महाराज के शब्द है।

एक पतिव्रता स्त्री अपने पति के सामने किसी को विशेष स्थान नही देती है। चाहे उसका पति गरीब हो। उसकी निष्ठा पति के प्रति सदैव बनी रहती है। इस उदाहरण के साथ महाराज जी वचनामृत में अच्छी बात किये है। पतिव्रता की तरह सत्संग में निष्ठा रखे। देव का, सम्प्रदाय का, आचार्य का, संत–हरिभक्तो का मान रखे। कही विरोध हो तो वीरता से उसका सामान करे। कमजोर नही बने।

भगवान ने इतनी दया नरनारायणदेव ने दिया है। हम लोगो के लिये जो बद्रिकाश्रम में तपस्या कर रहे है। ये देव हजराहजूर है। हरिभक्तो को अनुभूति होती रहती है। साक्षात् प्रगट स्वरुप हमारे मध्य नरनारयणदेव है। देश-पिदेश में अधिक संख्या में मंदिर और सत्संग बढता जा रहा है। इस समय हम सभी की जिम्मेदारी होती है कि इस प्रगति के भाग में हम कौन से रुप में सहायक हो सकते है। देव के लिये सम्प्रदाय के लिये क्या कर सकते है ? क्योकि कोने में बैठकर कार्य करना आसान है। देव के प्रति समर्पण कठिन है। आज के समय में दिन प्रतिदिन परिवर्तन होता जा रहा है। इस समय में हम को भूल नही जाये। सम्प्रदाय के जड को पकडे रखे। ऐसा मार्मिक टकोर करके अं तमें प.पू. लालजी महाराजश्री सभी को आशीर्वाद दिये थे।

प.पू. महाराजश्री, इडर मंदिर के १७८ वे वार्षिक पाटोत्सव के अवसर पर ता. २३-११-२०२४ : कई वर्षो के बाद देव का दर्शन मिला। आप सभी का दर्शन मिला। इतना विशाल मंदिर सिद्धेश्वर स्वामीने बना दिया। यह फोटो में देखे थे। अर्थात् एक हार लाये। बडा लाये शरीर के माप अनुसार यह इस लिये मजबूत है। इतना सुदंर काम किये है।

यह जो सम्प्रदाय है। इसके उद्‌भव का मूलकारण शिक्षापत्री में आप देखे। पहला धर्म मानवता का महाराज ने लिखा है। प्रतिदिन गाते है।

कोईने दुखियो रे, देखी न खमाय,
दया आणी रे, अति आकणा दाय.
अन्न धन वस्त्र रे, आपी ने दुःख टाले,
करुणा द्रष्टि रे, देखी वान न वाणे.

गाते है ? कोई भी मनुष्य हो। छोटा हो या बड़ा हो उम्र में, भाई-बहन, वच्चे-बच्चियाँ जो कोई भी हो। मंदिर एक ऐसी जगह है। जहाँ पर भगवान को दर्शन के साथ दूसरी सुख-सुविधा मिल रही है। पहले एक केन्द्र था। आप में से कई लोगो को ज्ञात ही होगा। पहले रामनवमी के दिन कालुपुर मंदिर में मेला लगता था। बडा सा समैया होता था। वृद्ध लोक किनारे पर बैठते थे। जैसे अंगुर का गुच्छा होता है। थोडे समय के बाद चालू, स्वामी। बाद में पूछे यह सब क्या है। तब ज्ञात हुआ कि रामनवमी के दिन एक दूसरे के विवाह को निश्चित करने के लिये मंदिर में एकत्र होते थे। भगवान के मंदिर में भगवान केन्द्र स्थान पर होते है। इसी के साथ एक दूसरे के साथ लोग मिलते ते। सुख दुःख की बात करते थे। या सामाजिक कार्य करते है। यह सभी सुविधाये मिलती है।

आज हमारे घर अच्छे बन गये है। मंदिरो के प्राँगण भी अच्छे हो गये है। भगवान भी श्वास लेते है। ऐसा लगता है। अगल-बगल के गाँवो से आप आये है। अपनी साँस एक जाती थी। आज ऐसा अनुभव होता है। समयानुसार सब कुछ होता है। किसी की कमी नही होती है। समझ और समय के साथ उन्नति प्रगति होती है। इसी के साथ सभी गाँवो का भी ध्यान स्वामी अच्छे से करते है।

आप को ऐसा प्रतीत होगा कि ये उपर बैठे है। अच्छा लड्डू खाते है। और सो जाते है। संसार में कहावत प्रसिद्धि है कि साधु बने तो स्वामिनारायण के ऐसा लोग मानते है। ऐसा भी कहते है कि भगत भी स्वामिनारायण का बने। तीसरी कहावत है जिसमें स्वामिनारायण आता है। दूसरे दो नही कहते है। यज्ञप्रकाशदासजी दो स्थान सम्भालते है। उनकी बात कर रहे है। यह तो मेरी बात है। वे कहते है। दो जगह के प्रबन्ध से थक जाते है। ऐस तो वहाँ से कहते है आ रहा हूँ खिचडी तैयार रखियेगा। दूसरा कहता है मैं दूसरे मंदिर पर आ रहा हूँ। दोनो को सम्भाले कैसे ? मानव तो एक ही है। कैसे पहुँच सकता है। लेकिन अपने हरिभक्त पास में ही है। आप सभी की निष्ठा है। हरिभक्तो का प्रेम है। ममत्व है। इसलिये मनुष्य रोटी और खीचडी माँग सकता है नही को क्या करेगे ? किसी के प्रति ममत्व होने पर ऐसा कहा जा सकता है। इस पर एक बात याद आती है। इसको मैने स्वामीजी से कहा कि दुनिया चलाना कठिन है। आप को दुकान चलाना हमे यह दुनिया चलाना कठिन है। तरह-तरह के लोग मिलते है। दुनिया मेइटीनेन्स वाली है। आप अच्छे सी गाडी लाये। मर्सीडीज गाडी के रखरखाव का खर्चा अधिक आता है।

सायकिल की भी चैन उतर जाती है। उसे भी तेल लगाना पडता है। सभी कुछ मेइन्टीनेन्स माँगता है। नया वर्ष आता है। कोई मुह चढा कर बैठा रहता है।

संतो की बात से याद आता है। अधिस समझने की बात है। हम किसी एक देश में गये थे। आधे दिन का अवकाश था। एक वृद्ध के प्रसिद्ध मंदिर में सबके साथ गये थे। वहाँ पर कोई विधि विधान चल रहा था। कुछ मोड रहे थे। यह देखकर पूछने का शौक हुआ। मै बोला यह सब क्या हो रहा है ? किसीने समझाया लेकिन अन्य भाषा होने के कारण कुछ समझ में नही आया। द्विभाषी आदमी से पता चला कि परसो इतसी सादी है। वह आज दीक्षा ले रहा है। यह कैसे हो सकता है। वह बोला बुद्ध धर्म में यहाँ पर यही नियम है। २४ घंटा के लिये भिक्षुक की दीक्षा लेने पर अनुभव कैसा लगता है ? यज्ञप्रकादासजी से मै कहा-ऐसा धतिंग हमे भी शुरु करना चाहिए। वास्तव में कितना कठिन है ? गृहस्थ होना भी कठिन है। किसी के कपडे में पैर डालने पर ज्ञात होता है कि कितनी जगह से अंगुली कट जाती है। यह अरस परस है। हम लोग तो बीच में फँसे है। साधु के साथ घुमते रहते है। घर पर नही होगे। हरिभक्त ऐसा मानते है कि रात्रि के दो बजे पहुच जायेगे। दो बजे जाकर क्या करेगे ? प्रातः उठ जाना, मंदिर जाना। यह लाइट मूड में बात कर रहा हूँ। वैसे बात करे तो त्याग आश्रम कठिन है। महाराज कहते है। गृहस्थ आश्रम श्रेष्ठ है। हमें तो दोनो की संतुलित करके चलना है।

दो दिन पहले गांधीधाम गये थे। तो इस पर बात किये थे। दूसरे-दूर से हरिभक्त आते है। पेट्रोल खर्च करना, विदेश से आये तो आने-जाने का प्लेन के टिकट का खर्च करना। प्लेन में तपस्वी की तरह बैठे रहना। कुछ करना नही और यहाँ पर आकर भगवान को खुश करने के लिये दान दक्षिणा डोनेशन देकर जाते है। यह एक बडा त्याग है। आप सभी यहाँ पर बैठे है। श्रोता रुप में ही नही बल्कि त्यागी रुप में बैठना पडता है। भगवान के प्रति लगाव के कारण यहाँ पर बैठे है। अपने सम्प्रदाय के हरिभक्त धन्य है। सिद्धेश्वर स्वामी का कान्सेप्ट (आइडिया) हो, विचार धारा हो सब कुछ उनका हो उसे साकार करने के लिये आप सभी का सपोर्ट होता है। यह अच्छा कार्य है। कितनी भी जीव के गुण आते है। बैठना, उठना, भोजन करना यह मिला उसमें आप का सहयोग है। यह बड़ा काम है। स्वामी दो जगह देखते है। टोरडा के भी महंत है। तारीख लिखवाना है टोरडा की, आप सभी लोग वहाँ पर आते है। और आना भी है। बड़े प्रोजेक्ट की कोई बात नही है। मै चेक प्रदान करुँगा पैसा की कहा चिंता है। भगवान के लिये बैठे है। दूसरा करना ही क्या है ?

अधिक जमीन के मालिक हो। इतने एकड-बीधे जमीन है। उनके पीछे ध्यान देकर बैठे रहते है। कि यह कब टपक जाये। कब मर जाये। पीछे से कोई मर्डर कर दे। इससे अच्छा तो भगवान के कार्य में लगे अच्छा है। आप नरनारायणदेव के कोठार में आते है। चेक देने क्यो चिंता करते है। ईडर का मंदिर हो या टोरडा का मंदिर हो। कही पर भी छोटे बडे कार्य चल रहे हो। सभी लोगो का सहयोग मिलता है। सोने से तैयार मंदिर में आनंद नही आता है। अपना मंदिर हरिभक्तो के हृदय में है। इस लिये अपने मंदिरो में भगवान हँसते दिखायी देते है। कुछ देर मंदिर के मूर्ति के पास खडे रहने पर स्मित का दर्शन प्राप्त होता है। यह मैं गम्भीरता से बता रहा हूँ। ईडर के भगवान तो अति क्यूट है। सुंदर ऐसे कुछ क्षण दर्शन से आनंद मिलता है। इस लिये इस प्रांत के हरिभक्त आप भाग्यशाली है। इस लिये दर्शन के लिये विशेषकर आये। अब तो रास्ता भी चौडा हो गया है। मै बाय पास होकर आया हूँ। गाँवो में से आना भी अच्छा है। अगल-बगल का कोई गाँव क्या नही है।

आप लोग जो ममत्व देव के प्रति रखे है। जो सपोर्ट कर रहे है। विशेषकर धर्मादा, यह ध्यान हमेशा देना। इससे मंदिर का निभाव होता है। अभी टोरडा की बात कहे है। आप लोग मंदिर में दान देते है। हम ट्रान्सफर भी करते है। आप के पास से हम पैसा नही माँग रहे है। लेकिन महाराज ने शिक्षापत्री में आज्ञा दिये है। धर्मादा को छोडना नही है। धर्मादा देव का है। यह मान कर आप देते है। और

देते रहियेगा। आलस्य नही करना है।

भगवान हम सभी को सुखी रखे है । मै हमेशा कहता रहता है। भगवान नही मिले होते तो हम लोगो की क्या दशा होती ? विचार करे । बोले ! सापावाडा चड्डी पहनकर बीडी पीता। हम छपैया में रहते है। हम लम्बी चड्डी पहनते। अंत में यह होता ही। भगवान नही मिलते तो क्या करते । दूसरा क्या होता ? सत्य है हमेशा बोलते है । सामान्य घर की बेटी का विवाह अच्छे घर में हो तो उसे पैसादार नही बनना पडता है । वह बन ही जाता है । हम लोगो की कुंडली भगवान के साथ होने के कारण सुखी हो गये है। आप के तथा हमारे भाग्य में इतना सुख नही लिखा था। गद्दी, तकिया नही लिया था। लड्डू तैयार ही है। भगवान मिले है। आप और हम सुखी बन गये है। इसी तरह हमे रहना है। शेष आगे-पीछे, शेष संसार तो चलता रहता है। भगवान को कभी नही छोडे। इस पर ध्यान दे।

यजमान परिवार अधिक श्रद्धालु है। अपनापन, ममत्व है। आप की तथा इस परिवार को धन्यवाद। अच्छा प्रबन्ध किये है। शेष किसी को साधु बनना हो तो विचार अवश्य करे। हमको ज्ञात हुआ है कि टेम्परेरी कान्ट्रेक्ट पर साधु बनाये जाते है । यह दुनिया गजब की है । कल आचार्य भी ठेके **(Contract)** पर मिलेगा। किसी के उपरी नही कह रहा हूँ। कोई अपने उपर नही ले। इस डिब्बे में सब कुछ वायरल होता है। सब कुछ आउट सोर्स होता है। सत्य कहता हूँ। इलेक्शन में बस से मैदान भर देते है। गुरुकुल के बच्चो को लाकर भर देते है। यह कान्ट्रेक्ट से साधु मिलते है। इस प्रकार ठेके से आचार्य नही बने तो अच्छी बात है । कभी भगवान को भी ठेके पर रखना पडेगा। संसार में भगवान भी ठेके से पूजे जाते है। तीन महीना का पूजन भरे। कार्य नही होने पर बदल दे भगवान को यह कोई कलियुग का प्रभाव नही है । यह पहले से चला आ रहा है।

सभी का मनपसंद होने पर आनंद आता है। मेरे आप के सिद्धान्त मे इतना कटिन है। यह सत्य बात है। सिद्धान्त छोड दे तो कोई चिंता ही नही है। यह सिद्धेश्वर स्वामी बैठे है। उत्तम स्वामी गुरु बाद में मुकुंद स्वामी गुरु के बाद हरिभक्त भी कोई छ महीने मे गुरु बदल दे। लेकिन सत्य तो यह है कि जिस भगवान को पकडे है वह दिशा सच्ची है। हल्के में बात अलग है। सत्य यह है कि महाराज ने हम सभी को सम्प्रदाय दिये है। जो परम्परा दिये है वह कही पर भी नही है । बडे माल या एअरपोर्ट पर सीढी चलती रहती है। हमे केवल खडे हो जाना होता है। सीधे खडे होने पर जा सकते है। अन्यथा गिर भी सकते है। इस प्रकार महाराज ने अक्षरधाम का रास्ता चलता हुए बनाये है। सीधे होनेप र चढ सकते है। न होती जाणी, न होती दीठी, एवी रीत प्रगटावी पुरुषोत्तम प्रगटी रे, नंद संतो ने लिखा है कि यह सब धुमता रहता है। आप विचार तो करे किसने प्रतापी यह भगवान है। राजा महाराज कहे समय से लेकर इस मंदिर का इतिहास है । संत कहे भी होगे और आपको ज्ञात भी होगा। हमारे पास इतिहास है। दूसरे स्थान पर दंत कथा है।

इतने अच्छा कार्य हुआ । एक बार पुनः सिद्धेश्वर स्वामी तथा उनकी टीम को धन्यवाद, अभिनंदन, कारण साँस लेते भगवान रहते है। हमें अच्छा लगता है। थोडी देर लान में बैठने पर श्वास अच्छी मिलती है। खेत में जाने पर ५ से १० वर्ष उम्र बढ जाती है । अहमदाबाद मे आठवे मंजिल पर रहने पर कुछ नही बढेगा । कम हो जायेगा । जितना लिफ्ट उची उतने दिन कम समझ ले।

अंत में देव का बन कर रहे। इतना कहकर यजमान परिवार सहित सभी को आशीर्वाद प्राप्त हो।

नया प्रकाशन "अमृत आचमन"

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. १००८ आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से शास्त्री स्वामी श्रीहरिकेशवदासजी शिष्य शास्त्री स्वामी हरिप्रियदासजी के लेखनी द्वारा लिखे वचनामृत शास्त्र के आचमन स्वरुप ''अमृत आचमन'' पुस्तक का प्रकाशन हुआ। और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कर कमलो द्वारा इसका विमोचन किया गया था।

प्राप्ति स्थान (१) श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर अहमदाबाद (साहित्य केन्द्र) (२) श्री स्वामिनारायण मंदिर, से-२३, गांधीनगर।

मूर्ति, मनोहर महाराज की

- नटूभाई पटेल (राजपुर वाले - कैनेडा)

नेणे निरखी नाथ रे, धन्य थयो गिरधारी,
मुझ उर मां रहेजो श्रीहरि, पाप टाणो अविनाशी.

पूर्ण पुरुषोत्तम श्री स्वामिनारायण भगवान इस पृथ्वी के बारे में मनुष्य शरीर विचरण समय के स्वरुप - देह बनावट के समय बनी श्रीजी महाराज की मूर्ति में स्वरुप में रंगमहल (कालुपुर स्वामिनारायण मंदिर) श्री घनश्याम महाराज, चतुर, सुजान, अक्षरधाम के मालिक, दया के सिंधु, वनमाली, सुख के सागर श्री सहजानंद स्वामी, श्री नगर (अहमदाबाद) जब तब आकार पधारने पर रात्रि विश्राम और उस समय पर रुकते थे । वह पित्र प्रसादी की जगह अर्थात् रंगमहल, वर्तमान में श्री घनश्याम महाराज की मूर्ति मंत-मूर्ति है । उपर के तल पर जहाँ पर स्नान करने वाला चबुतरा, जहाँ पर दातून करते थे । नजदीक में कियारी (पानी वाला सकरा कुँवा) जिस जल का प्रयोग महाराज करते थे । वहाँ पर छत्री रुप स्थापत्य है । जिसमें घनश्याम महाराज का चरणारविंद का दर्शन आज भी दिखायी देता है।

अपने नंद संत हजारो कीर्तन रचे है । इन कीर्तन के शब्दो में श्रीजी महाराज के स्वरुप की बात किये है । जिसमें लेश मात्र भी बदलाव नही है । वैसा अक्षरधाम का स्वरुप है । वह घनश्याम महाराज की मूर्ति में है । यह खडी है । वही अदा, वही लीला, प्रेमरस युक्त नयन, आलिंगन करे ऐसा वात्सल्यभाव है । प्रतिक्षण ऐसा लगता है । इसमें भी प्राप्त: शांत, सौम्य, सुदंर अहलदिक कलात्मक रुप में संत तथा हरिभक्तो के प्रेमपूर्ण कीर्तन के मधुर शब्द, स्वर्णिम सिंहासन, सुगंधित पदार्थो की महक, वह सहजानंद के मूर्ति सात है । इस स्वरुप का नख शिखर दर्शन मन को माया से दूर करता है । केवल दर्शन करे । स.गु. ब्रह्मानदं स्वामी के शब्द याद आ जाते है।

प्रात: समे पातलिये केरु, कोडे दर्शन करीये रे,
महामनोहर नौतम मूर्ति, लोचनिया मा घरी ये रे.

वर्षो पहेला प.पू. आचार्य केशवप्रसादजी महाराजश्री द्वारा वडनगर के लल्लुभाई (शिल्पी) द्वार उत्तम कोटि के लकडी में से महाराज की प्रतिकृति रुप मूर्ति बनवाये थे । समय जाने पर वि.स. १९४२ में कार्तिक सुद-१२ के दिन प्राण प्रतिष्ठा किये थे । वस्त्राअलंकारो के साथ मूर्तिवत स्वरुप दिये थे । आचार्यो, संतो-हरिभक्तो के दर्शन सुख के लिये प्रस्थापित किये । इस मूर्ति से कई परचे ऐश्वर्य, तथा लीलाये चमत्कृत हुए है । तीनप ट्ट वाली पीली पगडी, नवरंगी डगले, जरकसी युक्त जामा, कंठ में जडित मालाये, सुगंधित पुष्प के हार, दाहिने हाथ में गुलाब का फूल, दाये हाथ में काला तिल, हँसता चेहरा, वाह प्रभु, वाह घंटे तक देखते रहे । नयनाभिरम दर्शन । कई जीवो के कल्याणहेतु सुख देने के लिये प्रभु खडे दिखाई देते है ।स.गु. प्रेमानंद स्वामी के शब्द धीरे धीरे याद आ जाता है।

शोभा सागर श्याम तमारी मूर्ति प्यारी रे,
मूर्ति प्यारी रे, नांखु मारा प्ारण कारी रे.

दुख, विषाद, समस्या, कठिनाई, मन के विकारयुक्त विचारो के तरंग दर्शन के बाद हट जाता है । इसका दर्शन करने से सारे दुख कट जाते है । यह मूर्ति, मनोहर महाराज की आध्यात्मिक जीवन की दीवा-दाडी है । यह दर्शन कल्याणकारी है । इस भव्य प्रसादी की जगह जहाँ पर स्वयं खुद भगवान श्रीहरि रुकते थे । इसी आकार की मूर्ति की बात नही कर सकते है।

हजारो संतो-हरिभक्तो का मनोरथ यहाँ के दर्शन से पूरा होता है । व्याधि से मुक्ति मिलती है । कई मंदिरो में श्री घनश्याम महाराज के मू र्ति का दर्शन होता है । इस मूर्तियो की भी महिमा है । यह प्रसादी का स्थल है । विश्व का इस सम्प्रदाय का प्रथम मंदिर वह भी श्री नरनारायणदेव ऐथिहासिक प्रांगण में, प.पू. आचार्यश्री केशवप्रसादजी महाराज के स्वयं के हाथो से शास्त्रोक्त विधि से प्राण प्रतिष्ठा हुंइ है । यह मूर्ति धर्म-भक्ति, ज्ञान वैराग्य की निष्ठा में श्रद्धा और विश्वास का दीप प्रगट किये है । यह दर्शन सुख, प्रदान करता है । अक्षरधाम का सहज में सुख प्राप्त करते है । इससे जन्म सफल हो जाता है।

सच्छास्त्र

- संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

अवतार धारण करके श्रीहरि को जो जो कार्य करना था। वह सब सम्पादन किये भी श्रीहरि भविष्य में होने वाले मनुष्यो का हित भी होता रहे। इस विचार से अर्न्तध्यान होने से पहले तीन गूढ संकल्प किये । उनमे से एक संकल्प अर्थात् शास्त्र उन शास्त्रो में शिक्षापत्री स्वयं लिये लिये थे । वचनामृत (२७३) स्वयं बोले है । श्रीहरि के द्वारा नियुक्त किये गये पाँच विद्वान नंद संतो ने उनका संकलन किये । उन का नाम 'वचनामृत' नामक ग्रंथ सम्प्रदाय के लिये तथा पूरे संसार को भेट दिये । धर्म, भक्ति, ज्ञान और वैराग्य के बोध के लिये श्री शतानंद मुनि द्‌वारा 'सत्संगिजीवन' जिसे धर्म शास्त्र कहा जाता है । ऐसे ग्रन्थ की रचना किये । अग्रणी संतो और भक्तो के हस्ताक्षर के साथ 'देश का विभाग लेख' लिखवाये । ये चार शास्त्र सम्प्रदाय के संविधान है। जिसे सुप्रीम कोर्ट ने भी मान्य किया है।

इसके बाद श्री वासुदेवानंदवर्णी द्वार सत्संगिजीवन का अनुसरण करता एक ग्रंथ ''सत्संगिभूषण'' लिखवाये। जिसे भक्ति शास्त्र भी कहा जाता है । इसके बाद श्रीरि के समकालीन कई विद्वान नंद संतोने काव्यो और चरित्रो को अद्वितीय ग्रंथ लिखे है । इन ग्रंथो में श्रीहरि अधिक प्रमाण दिये है। इन प्रत्येक शास्त्रो में श्रीहरि के सर्वावतारी पन और सर्वोपरि सिद्ध होता है। इसके पस्चात कही पर भी अवतार का युक्ति पूर्वक भी खंडन नही होने दिये है। यथास्थान पर प्रत्येक अवतारो की महिमा भी गाये है । श्रीहरि के द्वारा प्रस्थापित अपने स्वरुपो को श्रीनरनारायणादि देवो के श्रीहरि के साथ एकत्व लाये है। पूर्व में जितने अवतार हुए है । सभी अवतार श्रीहरि का ही है । कोई अलग तत्व नही है। भगवान एक ही है । जब जैसा कार्य होता है । वैसे श्रीहरि वैसा अवतार धारण करते है । इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किये है। प्रत्येक शास्त्र का एक समान सिद्धांत है। किसी के भावना को ठेस पहुंचाये विना प्रगट भगवान की उपासना भक्ति की महिमा बताये है।

और जिस शास्त्र के विषय में श्रीकृष्ण भगवान तथा श्रीकृष्ण भगवान जो वाराह आदि का अवतार वह युक्ति पू र्वक खंडन किये हो । ऐसे शास्त्र, उस शास्त्र को न माने और सुने भी नही (शि.प. श्लोक नं. २९)

कही 'वातो' के पुस्तक में 'उपदेशामृत' की पुस्तक में अवतारो को श्रीहरि के आगे 'जोडा' हो श्रीहरि समकालीन किसी हरि भक्त को छोटा बच्चा को बड़ा बाताय हो तो यह अचूक खंडन किया गया होगा । कोई एक नंद संत एक एक रोम में अनंत कोटि ब्रह्मांड अणु के साथ उडते है । यह होने पर युक्ति पूर्पक भगवान और भक्त में जो स्वामी और सेवक का भाव रहा है । उसका अंत करदे । श्री नरनारायणदेव और श्री लक्ष्मीनारायणदेव आदि देवो ने श्रीहरि से न्युन करके अलग कर दिये है । जब कभी भी पुस्तको में विरोधाभास आये तो मुख्य सास्त्र का पालन करना चाहिए।

ऐसे साहित्य प्रकाशन में श्रीहरि द्वारा स्थापित धर्मवंशी आचार्य परम्परा के आचार्य श्री का आज्ञा पत्र नही होता है । प्राइवेट संस्थाओ द्वारा ऐसे साहित्य का प्रकाशन अधिक होता है । अपना कालुपुर मंदिर ऐसे अतिशयोक्ति वाले साहित्य का प्रकाशन नही करता है। तथा इस मंदिर के अन्दर आने वाली संस्थाये भी ऐसा नही करती है। हो सकता है कि कोई भक्त अनजाने में यहाँ पर रख दे । इतना ही नही प्रभावशाली व्यक्ति कथा-वार्ता के मध्य ऐसे साहित्य लेकर बैठ भी जाते है।

और जो श्रीकृष्ण स्वरुप, अपने सेवा में धर्म वंश के जो आचार्य, इन्हे दिया हो । अपना वे आचार्य जिस रुप की प्रतिष्ठा किये है। उसी स्वरुप का ध्यान दे । शेष स्वरुप प्रणाम करने योग्य है । उन सबका पालन करना योग्य नही है । (शि.प श्लोक नं. ६२)

मूर्ति के समान शास्त्र भी भगवान का स्वरुप होने के कारण सम्प्रदाय की परम्परा रही है। नये प्रकाशन पर उसमें गद्दी पर विद्यमान धर्मवंशी आचार्यश्री का आज्ञा पत्र रहे । तभी वह पुस्तक सच्छास्त्र बनता है । भगवान के स्वरुप बनता है । पढने के लिये । पाठ करने के लिये । सुनने योग्य तथा जीवन में उतारने योग्य बनाये । पूजा योग्य भी हो । पाठ करने से या सुनने से या अंत में जो फल लिखा होता है । मिलावटी पुस्तको से समय बिगाडने वाली बात है । नये

मुमुक्षु इससे दूर रहे।

अपने हित को चाहने वाले प्रत्येक निष्ठावान संतो-भक्तो से नम्र प्रार्थना है कि अपने पास आचार्यश्री के आज्ञा वाले शास्त्र को रखे । इसके अलावा पुस्तको को भेट भी स्वीकार नही करे । तथा इस तरह की पुस्तक भेट भी न दे । यहि है तो योग्य व्यवसथा करे । जिससे भविष्य की पीढी के हाथ में नही आये । इसमें कीर्तन का साहित्य भी आ गया । आज्ञापत्र के विना नंद संतो द्वारा रचित ग्रंथो का प्रकाशन परिवर्तन कर देते है।

अपने मूल मंदिर के महंतश्री अथवा पदाधिकारी इस मंदिर के नोटिस बोर्ड पर यह नोटिस लगा दे । बिना आज्ञा वाली पुस्तक कोई मंदिर मे नही लाये ।

श्रीहरि स्वयं जिसे धर्म की ध्वजा सौंपे है । उसे सम्प्रदाय का हित हम लोगो से अधिक ज्ञात है । जो स्वामिनारायण सम्प्रदाय के कहे जाते है । कोई भी हरि भक्त आचार्य के आज्ञा विना कोई ग्रंथ छपवाना नही चाहिए । इसी में आराध्य देव की खुशी निहित है । अपनी विद्वता दिखाने के लिये अपने निजी स्वार्थ में ऐसे पुस्तक का प्रकाशन लेखको से या प्रकाशको से सौजन्य भेट यह सम्प्रदाय के लिये सेवा नही है । बल्कि कुसेवा कह सकते है।

यह एक सुक्ष्म बात है । इसके पश्चात महत्वपूर्ण होने से हम सभी के आचरण में आये । ऐसी शक्ति श्रीहरि सभी को दे । श्री नरनारायणदेव के चरणो में प्रार्थना है।

कारीयाणी के मालिक मांचा खाचर

– प्रो. सूर्यकांत भट्ट (भुज)

अखंड ब्रह्मचर्य के आग्रही श्री मांचा खाचर कारीयाणी के मालिक थे । भगवान स्वामिनारायण के प्रागट्य का दिव्य संदेश गढडा में दादा खाचर, अेभल खाचर को बताने वाले प्रथम थे । उनके माता-पिता भष्ट शाक्त पंथी थे । इस कारण से मांचा भक्त भी मार्गी पंथ में पढे थे ।

मांचा खाचर की समझदारी अधिक थी । दिल में दया भरी थी । वह उस समय के अंधश्रद्धा में विश्वास नही करते थे । जंत्र-मंत्र को वह लोगो को भ्रमित करने का माध्मय मानते थे । वह दृढता के साथ कहते थे कि हम संसार में जो कुछ हो रहा है । वह भगवान कर रहे है।

कारियाणी में वे एक सदाव्रत चलाते थे । वहाँ पर पर गरीबो तथा साधु संतो को अन्नदान दिया जाता था । एक दिन एक बार बाबा आकर खाचरजी से कहा कि मैं ताँबे में से सोना बना सकता हूं । आप सदाव्रती है । यह सदाव्रत के काम में आयेगा । आप की कीर्तिचारो तरफ फैल जायेगी । मुझे जो भी दक्षिणा देना होगा वह दे देना । मांचा खाचर घर में गये । बाबा को लगा कि बर्तन लेने गये होगे । वह वास्तव में घर में से लाठी लेकर निकले । लाठी दिखाकर बोले । यदि आप सोना बना सकते है तो बाहर दक्षिणा के लिये क्यो भ्रमण कर रहे है ? यह कह कर बाबा को गाँव के बाहर निकाल दिये । मांचा खाचर के मित्रे थे । उनका नाम भोजो भगत था । एक बार उन्हे बुलाकर कहे ''भोजा तुम भगवान को खोजने जाओ ।'' भगवान को खोज कर लाने पर तुम्हे पुरस्कार दूँगा । भोजा भी तीर्थ भूमि में भगवान को खोजने लगा । लेकिन भगवान कही पर नही मिले । वह एक बार आकाशवाणी सुना ''तुम घर जाओ, घर पर भगवान मिलेगा ।''

उसी समय भोजो चारण वहाँ से चले गये । मांचा खाचर से सब बात कहे । उन्हे दूसरे दिन यह समाचार मिला कि भगवान मांगरोल में है । वे वहाँ पर गये । वह समाधि लेकर श्रीहरि के आश्रित हुए ।

घर आते समय रास्ते में गढपुर पहुँचे । भगवान के प्रगट होने वाली बात मांचा खाचर, रेभल खाचर तथा दादा खाचर, जीवुबा, लाडुबा से कहे । मांचा भगत के आग्रह का सन्मान करते श्रीहरि कारियाणी में पधारे थे । तथा अपार लीला किये थे । बड़ा तालाब खुदवाये । वसंत पंचमी को समैया किये थे ।

एकबार श्रीजी महाराज उन्हे गढडा बुलाये थे । उस समय पाँच सो वीघा जमीन का सौदा हुए । अर्थात् चिंता हो गयी । ऐसी आसक्ति नही होना चाहिए । ऐशा मानकर गांव के पशुपालक रबारियो को बुलाकर यह खेत गाय, भैंट, भेड, बकरी के चारागाह के लिये दिये । तथा श्रीहरि के पास गढडा चले गये ।

लोया के तिसरे वचनामृत में श्रीहरिने मांचा खाचर का उल्लेख करते कहे है कि ''महात्मज्ञान के साथ भगवान का निश्चय होना इससे क्या नही हो सकता है । श्रीहरि अठ्ठारह परमहंसो दिये । उसमें मांचा भक्त का नाम आता है।

अपने हरि मंदिर तथा प्रसादी के स्थल (सादरा-वासणा देश)

– बिपीन पटेल (गांधीनगर)

अवतीर्य निजाक्षरात्परादिह मुर्त्या बदरीवने स्थितः।
भूवि भारत जीवशर्मणे नरनारायणदेव पाहिमाम् ॥

श्रीहरिने गुजरात के पावन भूमि को अपने चरणो के स्पर्श से पवित्र किये है। उत्तर गुजरात में गांधीनगर के पास 'सादरा-वासणादेश' की पवित्र धरा का दर्शन करते अगले के लेख में ३ नांदोल, सलकी और वर्धा का मूवाडा के प्रसादीभूत गाँवो के महत्व को समझे।

शास्त्रो के आधार पर तथा स्वयं दर्शन का लाभ लेने के बाद हृदय में उठे भाव तरंगो की दिव्य अनुभूति का स्वाद लेने देहगाम, वासणा-राठोड के पवित्र दर्शन का आनंद प्राप्त करे।

गांधीनगर से चिलोडा होकर २६ कि.मी. पर दहेगाम आता है। गांधीनगर जिले की एक तहसील है। सुखी समृद्ध शहर है। नांदोल-सलकी और वर्धा का मूवाडा दर्शन करके आगे जाने पर १० कि.मी. पर दहेगाम आता है।

(१) दहेगाम : दहेगाण में एस.टी.डिपो के सामने से गाँव में प्रवेश करते ही पूर्णिमा स्कूल होकर टेबला-फली में वर्तमान में प्रसादीभुत हरिमंदिर ''श्री स्वामिनारायण मंदिर'' का दर्शन होता है। छोटे से सिंहासन पर विराजमान श्री नरनारायणदेव, श्री रामकृष्णदेव का दर्शन करके धन्य बने। सिंहासन अच्छे नक्काशी वाला है। यह मंदिर स.गु. महानुभावानंद स्वामीने लगभग १५० वर्ष पहले बनवाये थे। यह मंदिर तो मूल श्रीजी महाराज के प्रिय भक्त ''गणेश भगत का फलिया'' के रुप में ''थावर सुथार'' के घर में बना है। वर्तमान मंदिर में श्रीजी महाराज के प्रसादीभूत चरणारविंद प्रस्थापित है।

लोक कथानुसार मंदिर में जब हनुमानजी महाराज की प्रतिष्ठा करना था। तब विरोधियो ने विरोध किया था। और हनुमानजी की प्रतिष्ठा नही हो सकी थी। तभी श्रीजी महाराज ब्राह्मण के वेश में आकर पूजारी से बोले कि आप सबको बुलाये समझायेगे। तब तक तो श्रीजी महाराज हनुमानजी की प्रतिष्ठा करके दूसरे दरवाजे से अदृश्य हो गये थे। विरोधी जब आये तो हनुमानजी की मूर्ति देखकर शांत हो गये। सभी लोग इस चमत्कार को नमस्कार किये। मंदिर के मध्य भाग में प्रसादी का स्तम्भ लगा है। श्रीजी महाराज वहाँ पर बैठकर आम खाये थे। इस मंदिर की महानता गाँव के शास्त्रो के आधार पर वर्णित किये है।

देहगाम में श्रीहरि लगभर चार बार पधारने का वर्णन है। संवत १८६२ में वडताल से उमरेठ, डडूसर, घमीज और वासणा होकर देहगाम पधारे थे। (भूमानंद की बात) इसके बाद पुनः संवत १८६३ में सरखेज, धमीज, वासणा होकर देहगाम में गणेशभाई पटेल के घर पधारे थे। उनकी धर्मपत्नी गंगाबाने भाव से श्रीहरि को भोजन करवाया था।(श्रीहरि लीलासिंधु)

देहगाम से नांदोल जाते नीलकंठ महादेव के प्रसादीभुत का मंदिर है। इस मंदिर में श्रीजी महाराजने पूजा किया था।

फिर एक बार उनावा से आदरज, सलकी होकर महाराज देहगाम आये थे।(सत्संगिजीवन प्रकरण-२)

भक्तचिंतामणी में श्रीहरि का दर्शन करके धन्य हुए थे। देहगाम के कई भक्त, भूघर भक्त, त्रिकम भक्त, कलभराम इत्यादि का उल्लेख मिलता है।

श्रीहरि जब वहेलाल में आते थे। तब देहगाम के गणेशभाई पटेल गाडी भर कर आम लाये थे। श्रीजी महाराज सभी संतो को खिलाये थे। (सत्संगिभूषण अध्याय-१)

वैसे देहगाम की महिमा अपार है। आईये अब दूसरे प्रसादी वाले गाँव वासणा-राठोड की महिमा जाने।

(२) वासणा राठोड : दहेगाण से मात्र ४ कि.मी. की दूरी पर नरोडा-देहगाम रोड पर महाप्रसादीभुत गाम वासणा राठोड आता है। श्रीजी महाराज के महामुक्तराज जेराम ब्रह्मचारी का गाँव है।

इस गाँव में महामुक्तरात श्री जेराम ब्रह्मचारी का जन्म ब्राह्मण कुल में हुआ था। बचपन से भक्ति रस में

પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રીની
નિશ્રામાં અમદાવાદ
શ્રી નરનારાયણદેવ યુવક મંડળનું
સ્નેહ મિલન

પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રીની
નિશ્રામાં સંતરામપુર
શ્રી નરનારાયણદેવ યુવક મંડળનું
સ્નેહ મિલન

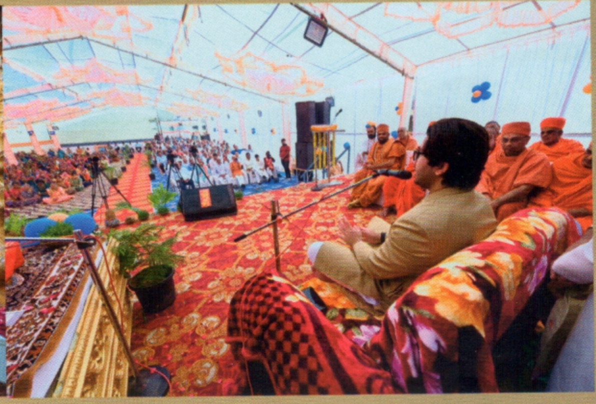

મોયદ મંદિરના પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીની આરતી ઉતારતા અને સભામાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રી

ધમાસણા મંદિરના પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીની આરતી ઉતારતા અને સભામાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રી

અમદાવાદ મંદિરમાં પૂનમે દાડમના અન્નકૂટની આરતી ઉતારતા પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રી તથા સભામાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રી

ઓળા મંદિરમાં શાકોત્સવ કરતા અને સભામાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રી

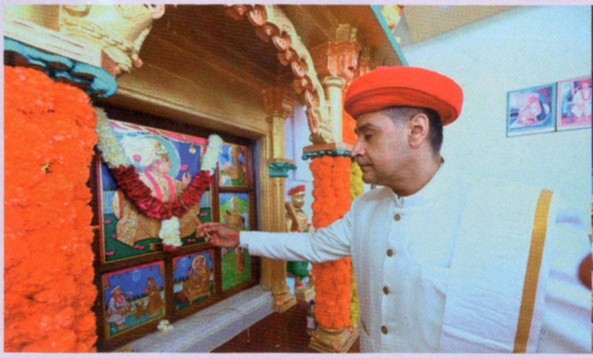

વાલમ (વિસનગર) નૂતન મંદિરમાં મૂર્તિ પ્રતિષ્ઠા કરતા અને સભામાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રી

નિકોલ મંદિરમાં ઠાકોરજીની આરતી ઉતારતા અને સભામાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રી

વડુ મંદિરના રજત જયંતી પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીની આરતી ઉતારતા પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રી તથા પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રી
અને સભામાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રી

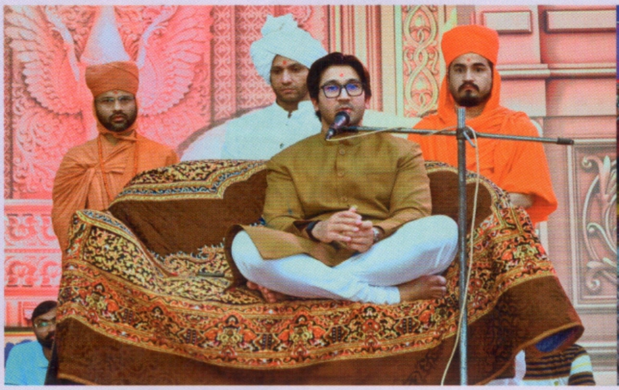

રામગઢ (મૂળી પ્રદેશ) મંદિરનાં પાટોત્સવ પ્રસંગે સભામાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રી

નવા વાડજ મંદિરના પાટોત્સવ પ્રસંગે સભામાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ. લાલજી મહારાજશ્રી

ગુલાબપુરા કથા પ્રસંગે આચાર્ય મહારાજશ્રીની આરતી ઉતારતા યજમાન પરિવાર તથા સભામાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ. લાલજી મહારાજ

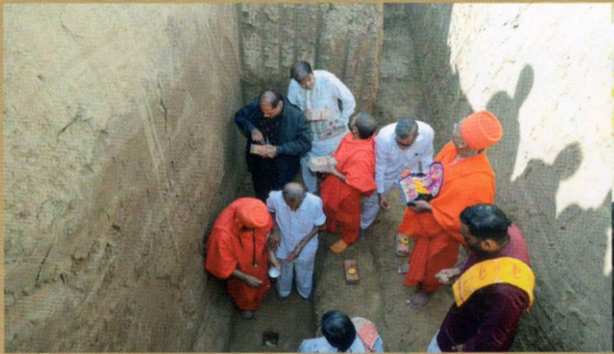

ભાભર (બનાસકાંઠા) નૂતન મંદિરનું ખાત મુહૂર્ત અને શાકોત્સવ કરતા અમદાવાદ મંદિરના મહંત સ્વામી તથા સંતો

માંડલ (વિરમગામ) મંદિરમાં શાકોત્સવ કરતા સંતો

શેરગામ (વિરમગામ) મંદિરમાં પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીનો અભિષેક કરતા સંતો

છપિયા મંદિરમાં નેત્રનિદાન કેમ્પમાં લાભ લેતા સ્થાનિક લોકો

બાપુપુરા ગામે કથામૃત પાન કરાવતા પૂ. રામ સ્વામી

मग्न भक्त जेरामदास को जब समाचार प्राप्त हुआ कि श्रीजी महाराज गाँव में आये है । तब ढोल किया के बुलाकर गाजे वाजे के साथ गाँव के सीमा पर एकत्र किये थे । श्रीजी महाराज ने जेरामदास को दीक्षा देकर जयानंदवर्णी नाम दिये थे । जेराम ब्रह्मचारी बडे कवि भी थे । कीर्तन आज भी ''आज सखी आनंदनी हेली'' सत्संग में प्रसिद्ध है । ब्रह्मचारीजी जहाँ पर रहते थे । वहाँ पर आज अपने श्री स्वामिनारायण का मंदिर भी है । श्रीजी महाराज का दर्शन करके धन्य होने वाला मंदिर है ।

वासणा-राठोड गाँव में श्रीजी महाराज कई बार आये थे । आइये शास्त्र के आधार पर देखे । श्रीजी महाराज इस धरा को पावन करके वृंदावन जैसा किये है ।

संवत १८६२ में वडताल से उमरेठ, डडूसर होकर वासणा आये थे ।(भूमानंद स्वामी की बाते)

उसी वर्ष में पुनः देहगाम पधारे थे । श्रीहरिलीला सिंधु-तरंग-१०) उसी वर्ष में तीसरी बार मोटेरा से वहेलाल होकर श्रीजी महाराज पधारे थे ।(श्रीहरिलीला सिंधु तरंग-२५)

इस प्रकार कई बार श्रीजी महाराज वासणा-राठोड गाँव में पधारे थे । वह उल्लेख मिलता है । जैसे कि घनश्याम लीलामृतसागर तरंग-५६ सत्संगिजीवन प्रकरण-२ आदि ग्रंथो में ये महान प्रसादीभूत गाँव की महिमा मिलती है ।

श्रीहरि के दर्शन से पावन हुए भक्तो के नाम भक्तचिंतामणी प्रकरण-१२० में चौपाई में दी गयी है ।

''द्विज भक्त छे मनछाराम, हरि मंगल मूलजी नाम पिताम्बर आदि भक्तभाई, जे कुँवर जतन रामबाई-३८ एह आदि बाई भाई जेह वसे गाम वासणा में तैह'' (श्रीभक्तचिंतामणी प्रकरण-१२०)

वासणा-राठोड गाँव में जेराम ब्रह्मचारी महामुक्तराज थे । ऐसे महान संत का जन्म स्थल, प्रसादी का मंदिर अवश्य देखे ।

(अनु. पेईज नं. ६ से आगे)

जायेगी । सभी का कष्ट दूर करेगे । विघ्न काटेगे । रास्ते के सभी विघ्न दूर करेगे ।

इसके बाद माता पार्वती की पुत्री ओखा । ओखा आवाज देकर बुलाती है । छोपडी में से ओखा बाहर आयी । माँ ने पू छा तुम कहा चली गयी थी ? अपने भाई की रक्षा नही की, कहाँ पर छिप गई थी । काँपती हुई ओखा ने कहा कि मैं अपने अंग बचाने के लिये मटके में छिप गयी थी । यह बात सुनकर गुस्से में माँ बोली कि नमक की तरह तुम्हारे अंग गल जाये । तुम्हारी शरीर नमक की तरह बन जाये । राक्षस कुल में जन्म हो । यह सुनकर ओखा माँ की काँपती हुई प्रार्थना करने लगी । इतना बडा दण्ड मुझे क्यो दे रही हो । मै निर्दोष हूँ । क्षमा करो, क्षमा करो । दया करते ओखा से बोली तुम्हारा नमक अवतार होगा ही । दैत्य कुल में जन्म भी होगा । लेकिन देव के साथ विवाह होगा ।

समय बीत जाने के पश्चात ओखा का शोणित पुर नरेश शिपपुत्र बाणासुर की पुत्री रुप में जन्म लिये । उसका नाम ''उषा'' रखा गया था ।उनकी शादी द्वारिकाधीश के पुत्र प्रद्युम्न के पुत्र अनिरुद्ध के साथ हुआ था ।

जगदंबा-पार्वती माँ पुत्री को वरदान दी थी कि चैत्र महीने में तुम्हारा जन्म मिनारक में होने के कारण जो कोई ओखा हरण का श्रवण करेगा उसके महारोग दूर हो जायेगे । चैत्र महीने में जो तीस दिन जो नमक सेवन नही कहेगा । अथवा पाँच दिन या एक दिन विना नमक का भोजन करगे । वह सौभाग्यवान होगा । कठिन कर्म से मुक्त होगा । सदैव निरोगी रहेगा ।

पार्वती माँ के श्राप से नमक को दोष लग गया था । उसकेनिवारण के लिये चैत्र मास और एकादशी व्रत में नमक खाना मना है । नमक खाने से व्रत नष्ट होता है । चैत्र मास में नमक नही खाना चाहिए । आज भी अपनी संस्कृति में चैत्र मास की नवरात्रि के व्रत में नमक नही खाया जाता है । ऐसे लोगो के उपर माता पार्वती की कृपा सदैव बनी रहती है । महीने भर नही तो एक दिन नमक का त्याग करना चाहिए ।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

सर्वे हरिभक्तो की सुविधा के लिये
प.पू. आचार्य महाराजश्री एवम् समग्र धर्मकुल के संकल्प से
इस वर्ष से

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के नये स्थापना दिन हर वर्षे दि. २९ मार्च के दिन पर मनाया जायेगा

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग की सूची-दिसम्बर-२०२४

ता. ०१-१२-२०२४	(प्रातः) प.भ. गीताबेन बलदेवभाई पटेल – झुलासणवाला – हाल यु.एस.ए.
ता. ०१-१२-२०२४	(दोपहर) प.भ.श्री गणपतभाई गंगारामभाई पटेल – पढेरपुरवाला – हाल मेमनगर.
ता. ०४-१२-२०२४	प.भ. चंपाबेन विष्णुभाई पटेल – पहकयडवाला – सायन्ससीटी, अमदावाद.
ता. १५-१२-२०२४	(प्रातः) प.भ.अ.नि.श्री लालजीभाई लवजीभाई पटेल परिवार – देवपुरावाला – ह. जयप्रकाशभाई.
ता. १५-१२-२०२४	(दोपहर) प.भ.श्री कांतिभाई गोविंदभाई परमार – शास्त्रीनगर – पौत्री रिध्धि प्रशांतभाई – सी.ए. की परीक्षा पास किया उसके लिये – कालुपुर अमदावाद.
ता. २८-१२-२०२४	(प्रातः) प.भ.श्री पुष्पाबेन बलदेवभाई पटेल – नारणपुरा.
ता. २८-१२-२०२४	(दोपहर) प.भ.श्री विवान संदिपभाई पटेल – सायन्स सीटी – अमदावाद.
ता. २९-१२-२०२४	प.भ.श्री सोमाभाई नाथाभाई पटेल – कोठंबा – हाथ से विभाबेन जसवंतभाई – शहेरा

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में भेट देनेवालों की सूची-दिसम्बर-२०२४

रू।.५१,०००/-	प.भ.श्री कांतिलाल नानजीभाई पटेल – नवसारी.
रू।.५०,०००/-	प.भ.श्री हसमुखभाई कान्तिलाल शाह – अमदावाद – ह. सौमील शाह.

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये – श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला ५/१०/२० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

सूचना : श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

સંપ્રદાયમાં એક માત્ર વ્યવસ્થા શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમમાં મહાપૂજા / મહાભિષેક નોંધાવવા સંપર્ક કરો.
મ્યુઝિયમ મોબાઈલઃ- ૯૮૭૯૫૪૯૫૯૭, પ.ભ. પરષોત્તમભાઈ - દાસભાઈ (બાપુનગર) : ૯૯૨૫૦૪૨૬૮૬
www.swaminarayanmuseum.org/com • email: swaminarayanmuseum@gmail.com

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) प्रबोधिनी एकादशी "जागरण" सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "जीवनमें क्षण-क्षण जागृति की आवश्यकता है"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

अभी कथा में बात आयी है । महाराज यहाँ पर बैठकर संतो को नट की कला सिखाये थे । महाराज की सभी लीलाये और बाते ऐसी ही थी । ये लीला कुछ सिखाने के लिये होता है ।नट की कला से क्या सीखने को मिलता है । (१) एकाग्रता (२) संतुलन नट की तरह हमारे जीवन में संतुलन और एकाग्रता होना चाहिए ।नट जब रस्सी के उपर चलता है तो वह संतुलन रखता है । और एकाग्रता रखता है । अपने कार्य के प्रति यदि दाहिनी एवं बाये और जाने पर गिर जायेगा । वह मध्य में चलता है । जिससे संतुलन बना रहता है । दूसरी एकाग्रता है । इसका ध्यान अपने कार्य में रहता है । अब उसके सामने देखते है । वह केवल अपने कार्य पर ध्यान देता है। उसी तरह हमे अपने लक्ष्य के प्रति एकाग्र होना चाहिए । जीवन में अति और अल्प का भाव नही होना चाहिए । उदाहरण अधिक आहार नींद, की कमी अधिकता दोनो कष्ट दायक होती है । यथोचित आहार नीद अच्छी होती है। हम इस संसार में आये है । तो हमारा मुख्य लक्ष्य क्या है ? 'भगवतप्राप्ति' की तरफ ध्यान नही देकर हम जगत की तरफ ध्यान देते है । तो लक्ष्य चूक जायेगा । जागृत रहे । हमे लक्ष्य की तरफ ध्यान देना है । यह सब इस बात से पचड पडती है । हमे भगवत् प्राप्ति के लिये प्रयत्न करते रहना चाहिए । तो भगवत् प्राप्ति के मुख्य तीन मार्ग है । (१) ज्ञान मार्ग (२) भक्ति मार्ग (३) निष्काम मार्ग जिस व्यक्ति के जीवन में ''वैराग्य'' अधिक होता है । वह जगत से अनासक्त रहता है । वह ज्ञान मार्ग में आगे रहता है । जो व्यक्ति संसार से अधिक विरक्त नही है । और अधिक आसक्त भी नही है । वह व्यक्ति भक्ति मार्ग में रतहा है । कर्म तो सभी को जीवन में करना ही है । और संचित कर्मो से बना ''प्रारब्धकर्म'' सभी को भुगतना पडता है । इस लिये निष्काम कार्य करना चाहिए । सकाम 'कर्म' हमे कर्म के बंधन में बाँधते है । निष्काम कर्म करने के लिये । सत्कर्मो का अभ्यास करना पडता है । अभ्यास हो जाने के बाद कोई भी ''आशा'' या कामना के वगैर जो कर्म करते है वह निष्काम कर्म कहलाता है । शरीर के त्यागने समय तक जो कर्म विनाशी सुख देता है । हमे सत्ककर्मो के साथ जीना चाहिए । यह जन्म आने वाले जन्म की तैयारी है । हम जैसा कर्म करेगे । वैसा जन्म मिलेगा । तो हमे क्या करना है ? हमे ऐसी तैयारी करना है कि अगला जन्म नही मिले इसके लिये आर्तता चाहिए । ''आर्त'' भक्त होता है । वह छोटे बच्चे के समान होता है । इसके कर्म भगवान शीघ्रता से टाल देते है । इसके लिये पूरी शरणागति होनी चाहिए । छोटा बच्चा अपने माँ को नही देखने पर कितना व्याकुल हो जाता है । हमे भगवान के प्रति ऐसी व्याकुलता होनी चाहिए । छोटे बच्चे की तरह माँ पर भरोसा होना चाहिए । इसी तरह हमारा भगवान के उपर भरोसा होना चाहिए । श्रद्धा से कभी हटना नही चाहिए । श्रद्धा हट जाने पर इसकी कोई दवा नही है । दस-पन्द्रह मिनट समझकर विचार बैठ जाना चाहिए । अभी तक हमारे जीवन में अच्छा ही हुआ है । भगवान सब कुछ पूर्ण किये है । आगे भी पूर्ण करेगे । ऐसी हिम्मत रखना चाहिए । अच्छे और खराब अवसर सभी के जीवन में आता ही है । भगवान शास्त्र के द्वारा रास्ता बताये है । विपरीत काल मे यदि कोई हमारी सहायता करता है । तो समझ लेना चाहिए कि भगवान सामने वाले की वुद्धि में प्रवेश किये है । हृदय में प्रवेश करके प्रेरणा दिये है । भगवान साक्षात् आकर मदद करे ऐसा अवसर कम आता है । किसी व्यक्ति को माध्यम बनाकर भेजते है । हमे समझ लेना चाहिए । कि हमारे दुःख के समय में कोई व्यक्ति प्रभु की कृपा से उपस्थित हुआ है । हमे भगवान से ऐसी प्रार्थना करना है । आप ऐसी हमें समझदारी दे कि हम आप को समझ सके । हमारी अन्तर आत्मा सदैव तत्पर रहे । कलियुग का प्रभाव हमारे उपर अवश्य पडता है । हम भगवान के सामने हाथ जोडकर पाँच मिनट खडे रहेगे तो अंदर से

आवाज आयेगी । गलत कर्मो का ज्ञान होगा । उस समय श्रद्धा हटती है । लगेगा शांति के लिये दर्शन करने आयी थी । यहाँ मन में उद्‌वेगभर जाता है । भगवान यह सब हमे याद दिलाते है । यह हमारी कमी है । इसे दूर करे । महाराज को चिंता है । भूल सुधारने का रास्ता बताते है । ऐसा होने पर भूल सुधार लेना चाहिए । हमें भी जागृत रहना है । हमारे मन केवल को तोडने वाले हजारो लोग है । यह कलियुग का समय है । जो हमे विचलित कर देता है । उदाहरण आफिस में कोई काम करे तो लोग कहते है कि इसमें तुम्हे क्या मिलता है । ऐसी नौकरी नही करना चाहिए । या अपनी आर्थिक स्थिती – परिस्थिती अच्छी तोही हो तो कुछ लोग समझायेगे । कि इस घर में मत रहो । क्या नौकरी और घर किसी के कहने पर छोडे देते है क्या ? नही छोडते है । क्योकि हमे ज्ञात है कि हमे इसकी कितनी आवश्यकता है । तो भगवान के विषय में कोई कहे मंदिर कम जाना चाहिए । भजन कम करो ? यहाँ से अच्छा वहाँ पर जाओ तो अच्छा है । तो श्रद्धा क्या हट जाती है । इससे सावधान रहना चाहिए । जीवन में क्षण-प्रतिक्षण जागृत रहना चाहिए । तो हमारी आध्यात्मकि प्रगति होगी । हमें यह लगता है कि ऐसा ही समय चल रहा है । समय का क्या कर संकेत है । हम समय का सद्‌पयोग कैसे कर सकते है । हमेशा नाम का स्मरण करना चाहिए । कलियुग में नाम स्मरण का करोडो महत्व है । सत्कर्म के लिये नाम स्मरण फायदेमंद होता है । नाम स्मरण से गलत कर्म नही होता है । यह भगवान के प्रति जुडने का प्रबल तरीका है । जब वृत्ति भगवानमय हो जायेगी तो इन्द्रियाँ उसी तरह कार्य करने लगती है । व्यर्थ की इच्छा ही आती है । नेत्र से खराब दृश्य देखने से अच्छा है कि भगवान का दर्सन करना चाहिए । सात्विक आहार लेने का मन होना चाहिए । इन्द्रियाँ स्थायी रुप से रहेगी तो उसे भी सत्कर्म ही कहा जायेगा । इन्द्रियो नियम मे नही होने पर हम भटक जायेगे । लालच दिखने पर हमारी दिशा बदल जाती है । ९९% लोग माया का हाथ पकडकर भवसागर पार कर रहे है । ऐसा दिखाई दे रहा है । यह तो ऐसा हुआ कि एक अंधा व्यक्ति अंधे का हाथ पकडकर आगे बढे । मेल नही है । हम भी माया के जाल में रहते है । यदि सजग नही होगे तो प्रमाद आ ही जायेगा । भगवान संबंधी कृत्य में प्रमाद आ ही जाता है । सांसारिक कार्य में तत्परता आ जाती है । यह कलियुग का प्रभाव है । कलियुग में मात्र नाम स्मरण करते रहे । हाथ जोडकर खडे रहने पर भी भगवान बड़े कष्ट दूर कर देते है ।

●

“आप का नाम न्यालकरण”

– कंचनबेन बाबुभाई अडालजा (रतनपुर-मूलीदेश)

सेवा की मूर्ति समा अंबा सेठ गडानी गाँव के थे । एक बार चार्तुमास मे ऐसा नियम रखे कि महाराज को प्रतिदिन हरी दातुन पहुँचाना था । वैसे तो यह नियम सुनने मे सबसे सरल लगता है । ध्यान देने पर पता चलेगा कि यह कठिन कार्य है ।

अंबा भक्त में एक पत्तर से गोल भूंगरी बनवाये थे । उसमें इलायची का दाना भर दिये थे । प्रत्येक शाम को ताजेदातुन काट कर लाते थे । उसे पतरे में रख देते थे । प्रातः तीन बजे उठकर स्नान करके पाँच बजे तक अक्षर ओरडी के पास आकर बैठ जाते थे । महाराज का दर्शन करके दातुन देते थे । महाराज हमेशा पाँच बजे उठ जाते थे । प्रातः काल की कथा वार्ता सुनकर आंबा भगत गढाली आकर अपनी दुकान खोलते थे । जो लोग सेवा करते ते । वे लोग समझदार और आनंदी स्वभाव के थे । एकबार गद्दी, तकिया, गद्दा, पीढा, रजाई इत्यादि की गाडी भरकर आयी थी । महाराजने कहा आंबा सेठ यह सब क्या लाये है ? महाराज आग लगने के बाद जो बचा है । उसे मै लाया हूँ । शेठ ने ऐसा उत्तर दिया । महाराजने पूछा कि आग मे से कैसे बचाया ? महाराज पूरे संसार में आग ही तो लगी है ? कही पर किसी को पूर्णता नही है । जो आप के काम आ सकता है । वही वस्तु ही बची है । शेष संसार में बालक कहे जाते है । महाराज आंबा भगत की समझदारी की प्रसंशा किये ।

एकबार गढपुर में समैया था । हजारो संत-हरिभक्त आये थे । उस समय आंबा सेठ दो से तीन गाडी खजूर भर कर लाये । और संतो को देने लगे । महाराज बोले इतना क्यो लाये है ? महाराज हम तो व्यापरी है । जहाँ पर अधिक लाभ मिले वही सामान देते है । गाँव में सामान कम बिकता है । लाभ भी कम तथा उधार भी ले जाते है ।

यहाँ पर नगद से बिक्री तथा लाभ भी अधिक होता है। इस लिये गाडी भर कर लाये है। ऐसा महत्व यह समझता था।

एक बार शक्कर भर कर गाडी लाये थे। तथा संत-हरिभक्तो को अंजली भर कर देने लगे। महाराजने कहा आज क्या है, इतनी शक्कर क्यो बाँट रहे हो ? आंबा बोले हमारे यहाँ की प्रथा है। किसी का नाम रखने पर शक बाँटते है। मैं आज आप का एक नाम रखा हूँ। इस खुशी में शक्कर बाँट रहा हूँ। हमारा नाम क्या रखा ? बातते भी नही हो। महाराज ने पूछा।

आंबा भगत ने कहा इस कलियुग में आफ प्रगट हुए है। तथा असंख्य जीवो का कल्याण किये है। लाखो भक्तो को अपार सुख देकर पापी पतित लोगो का उद्धार किये है। तथा लोगो को अक्षरधाम का अधिकारी बनाये है। सभी को मालामाल कर दिये है। इस लिये आज से आप का नाम ''न्यालकरण'' है। ऐसा नाम तो शास्त्र में भी नही है। कहाँ से खोज कर लाये हो। आंबालाल बोले कानुडो नाम किस शास्त्र में है। यह तो भगत को जो अच्छा नाम लगा रख लिया। इसी प्रकार 'न्यालकरण' नाम का जय बुलवाकर सभी को हँसा दिये।

•

"कर्म की गति न्यारी"

– लाभुबेन मनुभाई पटेल (कुंडाल, तालुका-कडी)

पूरा संसार कर्माधीन है। जो जैसा करता है। वह वैसा भोग करता है। कोई किसी को सुख-दुःख नही देता है। सबको अपना कर्म भोगना पडता है। वनवास के प्रथम दिन राम एवम् सीता रात्रि के समय भूमिपर शयन किये थे। यह देखकर निषादराज अधिक दुःखी हो गये। निषादराज विचार करने लगे कि अपार वैभव में रहने वाले राम-सीता आज रानी कैकेयी एक बार उग्र रोष व्यक्त करते लक्ष्मण स्वस्थ उत्तर देते है। कोई किसे के दुःख सुख का भागीदार नही होता है। हर व्यक्ति अपने कर्म अनुसार भोग कष्ट सहन करता है।

सीताजी के पिता जनकराज महान थे। ससुर दशरथ तथा वे इन्द्रदेव के मित्र थे। अयोध्या के राजा के महल में पलंग पर बैठने वाली सीता आज नंगे पैर वन में जाने (घुमने) का समय आ गया है। यह विधि की वक्रता नही तो और क्या ? पूर्व जन्म का संचित कर्म एकत्रित होकर भाग्यरुप में मिलता है।

जीवन में कईबार हमें ऐसा प्रतीत होता है कि कोई आदमी हमें अधिक दुःखी कर रहा है। तब यह पंक्ति याद करने योग्य होती है।

कोई किसी को सुखी या दुःखी नही करता है। लेकिन भाग्य हमे सुख दुःख का कारण बनाती है।

जब मानव को सुख प्राप्त होता है। तो वह स्वयं उसका यश लेता है। जब दुःख मिलता है तो दूसरे के उपर थोप देता है। यह कार्य अच्छा नही है। जगत में यह चक्र चलता ही रहेगा।

''चक्रवत परिवर्तन्ते सुधाति च दुःख तिचं''

सुख-दुःख में क्षमता धारण करना चाहिए। स्वस्थ रहना चाहिए। सुख दुःख अपने पूर्व जन्मो के आधार पर मिलता है। दूसरे को दोष देना गलत है। कोई किसी के कार्य में विरोध करने पर उसका फल भोगना पडता है।

रामावतार में श्रीराम ताड़ के सात वृक्ष के पीछे छिपकर बाली का वध किये। उसी का बदला अन्जाने अवस्था में कृष्णावतार में श्रीकृष्ण के पैर के उपर बाण मार के श्रीकृष्ण का वध किये थे। यह भी कर्म का सिद्धान्त है। सरलभाषा में कहे तो कर्म अर्थात् क्रिया। हम जो क्रिया करते है। वह कर्म होता है। कर्म को भोगे बिना किसी को छुटकारा नही मिलता है।

महाभारत के युद्ध में धृतराष्ट्र के १०० पुत्र एक साथ मर गये। तब राजा, श्रीकृष्ण से पूछा कि ''हे अच्युत मेरे जीवन में कोई भी भारी पाप नही किया है। फिर भी हमारे सौ पुत्र मारे गये। उत्तर में श्रीकृष्ण धृतराष्ट्र से बोले ''हे राजन आज से ५० जन्म पहले आप बहेलिया थे। एक बार पक्षीयो को पकडने के लिये पेड पर बैठे थे। पक्षीओ के उपर जलता जाल फेके थे। इससे कुछ पक्षी जल गये। यह कर्म पडा था। आप के दूसरे पुण्य के कारण सौ बच्चे पैदा हुए। पक्षीयो के जलने के कारण आप अंधे बने। १०० पुत्र का सुख मिला। उन पक्षीी के जल जाने से युद्ध मे आप के १०० बच्चे मृत्यु को प्राप्त हुए। कर्म की गती गहन है।

सत्संग समाचार

श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में धनुर्मास धुन महोत्सव

विश्व का सर्वप्रथम मंदिर अहमदाबाद में विराजमान परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री, प.पू. अ.सौ. गादीवालाश्री, प.पू.अ.सौ. बड़ी गाद्दीवालाश्री और पू.श्रीराजा के आशीर्वाद के साथ तथा अहमदाबाद मंदिर के पूज्य महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के सुंदर मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद में पवित्र धनुर्मास में तारीख १६ डिसम्बर से २०२४ से परम्परागत रुप से प्रात: सर्व प्रथम रंगमहल श्री घनश्याम महाराज के सन्मुख और इसके बाद मंगला आरती, बाद में प्रसादी के सभा मंडप में श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन ४५ मि. तक वाद्य यंत्रो के साथ किया जाता है। चारो तरफ का वातावरण धर्ममय हो जाता है। पूरे महिने हजारो हरिभक्त धुन कराये थे। धुन मे प्रति दिन नये प्रसाद का वितरण किया गया। धर्मकुल कभी-कभार आकार सभी को दर्शन का लाभ दिये।

प्रतिदिन प्रसाद को ३० दिन का यजमानश्रीओने प्रबन्ध किया था। सभी भक्त उत्साहपूर्वक सहायता प्रदान किये थे।

पूरे महीने के बीच पू. कोठारी मुनि स्वामी, पू. जे.पी. स्वामी, पू. बालु स्वामी, पू. भंडारी स्वामी, दिव्यस्वरुप स्वामी, भक्ति स्वामी आदि संत मंडल और धुन वितरण में हरिभक्त युवको ने सेवा दी ती।

श्री नरनारायणदेव की कृपा से श्री नरनारायणदेव देश में प्रतिदिन छोटा बड़ा समैया उत्सव की परम्परा चालु रहती है। पिछले दो मास से देश-विदेश में सत्संग विचरण सदैव चालू रहता है।

धनुर्मास धून-प्रसादना मुख्य यजमानश्री : (१) अ.नि. शारदबेन अमृतलाल पटेल (राजपुर) - ह. डाहीबेन ईश्वरदास पटेल, अल्काबेन महेन्द्रभाई, प्रियंका, निसर्ग - कुमारी मीरा (मोखासण), (२) प.भ. अमरतभाई कालीदास पटेल (गुलाबपुरावाला - दिलीपभाई)

दैनिक महाप्रसादना मुख्य यजमानश्री : ता. १६-१२-२४ (१) अ.नि. मीनाबेन दशरथभाई पटेल - ह. पूरवभाई दशरथभाई पटेल, ध्यान तथा सखी - चांदखेडा, (२) प.भ. पूजा नीलकंठ धानाणी - ह. नानुभाई (जीवराजपार्क)। **ता. १७-१२-२४** (१) पुरूषोत्तमभाई त्रिभोवनदास पटेल - भाउपुरावाला - ह. के.पी. पटेल तथा घनश्यामभाई तथा पिन्टुभाई - अहमदाबाद। (२) प.भ. विष्णुभाई कालीदास पटेल (गुलाबपुरावाला). (३) प.भ. जय गणपतभाई पटेल - ह. गणपतभाई गंगाराम पटेल, रिम्पलबेन पटेल, शानवी, रक्षा - शानवीना जन्मदिन निमित्ते। **ता. १८-१२-२४** (१) प.भ. प्रभुदासभाई उमेदभाई पटेल - ह. केनोय भूपेन्द्रभाई पटेल (अहमदाबाद), (२) प.भ. गांडाभाई कालीदास पटेल (गुलाबपुरावाला-अमदावाद)। **ता. १९-१२-२४** (१) अ.नि. लालजीभाई रामजीभाई पटेल - ह. रसिकभाई, हरिकृष्ण ओटो कन्सल्टन्ट (अमदावाद) , (२) अ.नि. बलदेवभाई जीवणदास पटेल - मुखी परिवार - आनंदपुरावाला - ह. गं.स्व. कोकिलाबेन बलदेवभाई पटेल। **ता. २०-१२-२४** (१) प.भ. मुकेशभाई मणीभाई पटेल (मामा) - ह. जील (अक्षर बंगलो) (गांधीनगर) उनावावाला), (२) अ.नि. गंगारामभाई महादेवभाई पटेल, अ.नि. नटवरभाई गंगारामभाई पटेल - ह. ईश्वरभाई तथा गणपतभाई। **ता. २१-१२-२४** (१) प.भ. निलेषभाई लल्लुभाई मांगुकिया (नवा निकोल), (२) प.भ. कोकिलाबेन जयंतीलाल पटेल (डांगरवावाला-अमेरिका) - ह. शैलेषभाई पटेल (मोखासणवाला)। **ता. २२-१२-२४** प.भ. दक्षेशभाई रमेशभाई पटेल (उनावावाला-चांदखेडा), (२) प.भ. आशाबेन महेन्द्रभाई पटेल - ह निलय, सन्नी अने कनुभाई पटेल(कल्याणपुरवाला), (३) अ.नि. कांताबेन लालजीभाई ढांकेचा - ह. जयसुखभाई लालजीभाई ढांकेचा। **ता. २३-१२-२४** प.भ. संजयभाई सी. पटेल -मुक्तिधाम साबरमती। **ता. २४-१२-२४** (१) अ.नि. पिताश्री लालजी केशरा वेकरीया, अ.नि. मातृश्री रतनबेन लालजी वेकरीया - ह. सुपुत्र मावजी लालजी वेकरीया सह परिवार (मांडवी), (२) अ.नि. अमरतभाई सेंधाभाई पटेल - ह. राकेशभाई तथा मनोजभाई (कुंडालवाला)। **ता. २५-१२-२४** प.भ. रमीलाबेन प्रविणभाई पटेल (सेडलावाला) - ह. वास्वी अने वेदांत (अमदावाद)। **ता. २६-१२-२४** (१) प.भ. शकराभाई रामदास पटेल - ह. महेन्द्रभाई शकराभाई पटेल (मारूसणावाला), (२) अ.नि. लालजी नानजी केराई - ह. श्रीहरि ट्रावेल्स (अमदावाद)। **ता. २७-१२-२४** (१) प.भ. बलदेवभाई जमनादास पटेल (डांगरवावाला) - ह. जश, ध्रुव (राणीप), (२) प.भ. दिया परेशभाई (नागरभाई) पटेल जन्म दिन निमित्ते (मारूसणावाला), (३) प.भ. राजेशभाई नागजीभाई सुहागीया - ह. प्रीजेश, नव्या (बापुनगर)। **ता. २८-१२-२४** प.भ. अनाया अंकितकुमार सुरेशभाई पटेल (पोरवाला-साबरमती)। **ता. २९-१२-२४** अ.नि. गांडाभाई जुगलदास पटेल (सोलावाला) - ह. भरतभाई पटेल। **ता. ३०-१२-२४** प.भ. रणछोडभाई विठ्ठलभाई पटेल (कुडासणवाला) - ह. सुशीलाबेन

रणछोडभाई पटेल (गांधीनगर) । **ता. ३१-१२-२४** कु. सेल्वी निलेशकुमार पटेल (चांदखेडा) - ह. निलेशकुमार जे. पटेल - सेल्वीना जन्म दिन पर । **ता. ०१-०१-२५** अ.नि. रमणभाई सोमदास पटेल (डांगरवावाला) - ह. संजयभाई रमणभाई पटेल (अमेरिका) - ह. दिपीकाबेन । **ता. ०२-०१-२५** प.भ. अमरतभाई कालीदास पटेल (गुलाबपुरावाला) - ह. दिलीपभाई । **ता. ०३-०१-२५** अ.नि. बालजीभाई चंदुभाई पटेल - ह. राजुभाई तथा संजयभाई (कोटेश्वर) । **ता. ०४-०१-२५** अ.नि. वल्लभभाई भुराभाई नशीत, अ.नि. दिवालीबेन वल्लभभाई नशीत - ह. प्रविणभाई तथा नरसिंहभाई (भायावदर-अमदावाद) । **ता. ०५-०१-२५** गं.स्व. सूर्याबेन गीरीषभाई पटेल - ह. केतनभाई, निमेषभाई (सायन्स सीटी) । ता. **०६-०१-२५** (१) अ.नि. लालजीभाई शामजीभाई पटेल (नरनारायण सिरामीक - गोता) - ह. मंथन राजुभाई पटेल (नवा वाडज), (२) प.भ. ज्योत्सनाबा जयदिपसिंह झाला - जन्मदिन पर - ह. कृष्णदेवसिंह झाला (चांदखेडा) । **ता. ०७-०१-२५** प.भ. जीनेशकुमार सुमनभाई पटेल (पोरवाला-अमेरिका) । **ता. ०८-०१-२५** (१) अ.नि. बाबुभाई मणीलाल शाह - ह. कमलेशभाई शाह (अमदावाद), (२) प.भ. विमलाबेन डाह्याभाई पटेल (माणसावाला) - ह. डाह्याभाई नारणभाई पटेल, मेहुलभाई अने पूरवभाई । **ता. ०९-०१-२५** अ.नि. पुरीबेन शंकरलाल नारायणदास (कोठावाला) - ह. दिपीकाबेन चंद्रकांतभाई पटेल (अमदावाद) । **ता. १०-०१-२५** (१) प.भ. रमेशभाई रायचंदभाई पटेल (अंबासण-अमेरिका) (२) प.भ. पर्व चीरायु प्रविणभाई देवाणी - ह. जे.पी. स्वामी । **ता. ११-०१-२५** (१) प.भ. शालीन अरविंदभाई दोंगा (बापुनगर), (२) प.भ. गणपतभाई गंगारामभाई पटेल - रक्षाबेन अने गणपतभाईना जन्मदिन निमित्ते । **ता. १२-०१-२५** (१) अ.नि. कांतिलाल चुनीलाल ठक्कर - ह. धवलभाई ठक्कर (भायलावाला), (२) प.भ. पटेल जगदीशभाई केशवलाल (जन्म दिवस निमित्ते) - (माणेकपुर-अमेरिका) । **ता. १३-०१-२५** (१) प.भ. सुरेशभाई रणछोडभाई ठक्कर (जीवराजपार्क-मकरबावाला), (२) प.भ. मधुबेन महेन्द्रभाई पटेल - ह. सुजलबेन अल्पेशभाई तथा शिखा अने कविशा । **ता. १४-०१-२५** अ.नि. रसिकलाल अंबालाल पटेल - ह. जयेशभाई तथा संजयभाई (मोखासण-अमेरिका) ।

सह यजमानश्री : ता. १६-१२-२४ (१) प.भ. ईश्वरभाई त्रिभोवनदास पटेल (माणसावाला - नारणपुरा), (२) अ.नि. मोतीभाई नाथाभाई चौधरी (ईश्वरपुरा) - ह. पार्थ गोविंदभाई मोतीभाई चौधरी (ओस्ट्रेलीया) । **ता. १७-१२-२४** (१) प.भ. चंद्रिकाबेन धर्मेन्द्रभाई पटेल (अमदावाद), (२) अ.नि. झरणाबेन जगदिशभाई सोलंकी - ह. हार्दिक जगदीशभाई । **ता. १८-१२-२४** प.भ. अल्पाबेन विष्णुकुमार पटेल - ह. देवर्शी, व्रीती, आदित्य, खुशी । **ता. १९-१२-२४** प.भ. दर्शन लालभाई सोनी - ह. भारतीबेन । **ता. २०-१२-२४** प.भ. हरि दर्शनभाई लालभाई सोनी । **ता. २१-१२-२४** गं.स्व. डाहीबेन गोपालभाई किशोरदास (आखज) । **ता. २२-१२-२४** प.भ. गणेशभाई बेचरभाई पटेल (विहारवाला) - ह. घनश्यामभाई तथा सचिनभाई, अमित, दिव्य, प्रिन्स अने विआन । **ता. २३-१२-२४** प.भ. जयश्रीबेन देवांगभाई पटेल । **ता. २६-१२-२४** प.भ. शैलेषभाई गोविंदलाल पटेल (मोखासणवाला) । **ता. ३०-१२-२४** प.भ. कनुभाई रणछोडभाई चोकसी परिवार (अमेरिका) । **ता. ०८-०१-२५** प.भ.अ.नि. गोरधनभाई वसरामभाई लाठीया - ह. मधुभाई गोरधनभाई लाठीया । **ता. ११-०१-२५** प.भ. गोमतीबेन गोपालदास पटेल (वडु) ।

बालभोग यजमानश्री : ता. २७-१२-२४ प.भ. कमलेशभाई बचुभाई पटेल परिवार - ह. तुषारभाई कमलेशभाई पटेल. (कोठारी शास्त्री स्वामी मुनि स्वामी) । (कोठारी शास्त्री मुनि स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नवा वाडज ६४ वाँ (भाईयोका) मंदिर बहनो का मंदिर का प्रथम पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल की आशीर्वाद से तथा पूज्य महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर नवा वाडज कृष्णनगर भाईयो के मंदिर का ६४ वाँ और बहनो के मंदिर का पहला पाटोत्सव ता. २८-११-२०२४ से ता. २-१२-२०२४ तक मनाया गया था।

पाटोत्सव के उपलक्ष्य में श्रीपुर के मध्य श्रीहरि रात्रीय कथा महंत शा. स्वामी यज्ञप्रकाशदासजी (कलोल-जमीयतपुरा) में वक्तापद से हुई थी।

पाटोत्सव के मुख्य यजमान अ.नि. धरमशीभाई खुशालभाई पटेल, अ.नि. मधुबेन धरमशीभाई पटेल परिवार, कथा के मुख्य यजमान अ.नि. लालजीभाई शामजीभाई पटेल परिवार - ह. स्व. कमलाबेन लालजीभाई पटेल परिवार आदि अनेक हरिभक्तोने अनेक सेवा यजमान बनकर लाभ लिये । ता. ३-१२-२०२४ के दिन प.पू. लालजी महराजश्री के करकमलो द्वारा ठाकुरजी की आरती की गयी । इसके पश्चात सभी को सभा में आशीर्वाद दिया गया । धामोधाम से अधिक संख्या में संत लोग आये थे । (कोठारीश्री - नवावाडज मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (से-२) रजत जयंती महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री, प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री, प.पू.अ.सौ. बड़े गादीवालाश्री एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद के साथ पूज्य महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर)

की प्रेरणा से उसी प्रकार गांधीनगर से-२ के महंत स्वामी, कोठारी शा. स्वामी भक्तिजीवनदासजी तथा पूरे सत्संग समाज गांधीनगर के सुंदर प्रबन्ध से श्री स्वामिनारायण मंदिर से-२ का रजत जयंती महोत्सव ता. २-१२-२०२४ मार्गशीर्, सुद-१ नसे ता. ८-१२-२०२४ मार्गशीर्ष ७ तक मनाया गया था। सि अवसर के उपलक्ष्य में सम्प्रदाय के वक्तापद से श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण का हजारो श्रोताओने कथामृत का पान किये थे।

रजत जयंती महोत्सव और पारायण के मुख्य ययमजान प.भ. रणछोडभाई विठ्ठलभाई पटेल, शुशीलाबेन रणछोडभाई पटेल परिवार, अ.नि. नटवरलाल विठ्ठलभाई देसाईभाई पटेल, गं.स्व. कोकिलाबेन नटवरलाल पटेल परिवार था । २५ वाँ पाटोत्सव के मुख्य यजमान प.भ. गोरधनभाई रणछोडभाई पटेल, अ.सौ. शांताबेन गोरधनभाई पटेल परिवारने लाभ लिया था। पूरे प्रसंग में प.पू .आचार्य महाराजश्री ता. ८-१२-२०२४, प.पू. लालजी महाराजश्री ता. ७-१२-२०२४ के दिन पधारे थे । सर्व प्रथम ठाकुरजी की आरती उतारकर सभा में विराजे थे। सभी को आशीर्वाद दिये थे। प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री तथा प.पू.अ.सौ. बड़े गादीवालाश्री बहनो को दर्शन और आशीर्वाद दिये थे। धामो-धाम से संत, महंतश्री, राजकीय, धार्मिक अग्रणी लोग पधारे थे । पूरे अवसर का संचालन स.गु.को.शा. स्वामी नारायणमुनिदासजी (कालुपुर) और स.गु. महंत शा. स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी (एप्रोच) ने किया था।(महंतश्री देव स्वामी - उनावा)

श्रीहरि के चरणकमल से अंकति वडु (ता. कडी) श्री स्वामिनारायण मंदिर का रजत जयंती महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री, प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री, प.पू.अ.सौ. बड़े गादीवालाश्री एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. शा. स्वामी नारायणवल्लभदासजी (महंतश्री वडनगर) तथा स.गु. शा.स्वा. विश्वप्रकासदासजी के मार्गदर्शन में वडु गाँव के ट्रस्टी मंडल रजत जयंती महोत्सव समिति तथा श्री नरनारायणधेव सत्संग समाज के सुंदर प्रबन्ध से श्री स्वामिनारायण मंदिर वडु (भाईयोका) रजत जयंती महोत्सव और बहनो के मंदिर का ५ वाँ वार्षिक पाटोत्सव श्री वासुपूज्य श्री हनुमानजी महाराज का १९ वाँ वार्षिक पाटोत्सव कथा पारायण ता. ४-१२-२०२४ से ता. ८-१२-२०२४ तक मनाया गया था।

पाटोत्सव के अवसर पर आयोजित श्रीमद् सत्संगिभू षण पंचान्ह कथा पारायण वक्ताश्री स.गु. शा. स्वा. अभिषेकप्रकासददासजी (वडनगर), स.गु. महंत शा. स्वामी सत्यसंकल्पदासजी (नारायमघाट) ने सुंदर कथा का पान कराया था । महोत्सव के मुक्य यजमान गं.स्व. सीताबेन भक्तिभाई खोडीदास परिवार रहा था। कथा पारायण के यजमान अ.सौ. ताराबेन बलदेवभाई मफतलाल पटेल परिवार था। श्रीहरियज्ञ के मुख्य यजमान अ.नि. परसोतमदास भोलीदास पटेल, गं.स्व. मंगुबेन परसोतमदास पटेल परिवार रडा था। ता. ७-१२-२०२४ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। और निज मंदिर में ठाकुरजी की आरती (रजत जयंती) की आरती उतारे तथा सभी को आशीर्वाद प्रदान किये थे।

ता. ८-१२-२०२४ को प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे। आरती उतारकर आशीर्वाद दिये थे। प्रसंग के मध्य बहनो को आशीर्वाद देने के लिये प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाश्री पधारी थी। पूरे अवसर का संचालन स.गु. शा. स्वा. विश्वप्रकाशदासजी (वडनगर), शा.स्वा. धर्मकिशोरदासजी गु शा.स्वा. आनंदजीवनदासजी ने शोभा बढाया था। धामोधाम से संत, महंत अधिक संख्या में पधारे थे । (स.गु. महंत शा. स्वा. नारायणवल्लभदासजी - वलडनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ओला का २६ वाँ पाटोत्सव - शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. महंत स्वामी सगु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर), स.गु. शा. स्वा. गुरुप्रसादासजी (कलोल) की प्रेरणा उसी प्रकार पू. स.गु. स्वामीश्री हरिचरणदासजी के अच्छे मार्गदर्शन से श्रीहरि प्रसादीभूत ओला गाँव में श्री स्वामिनारायण मंदिर का २६ वाँ पाटोत्सव एवम् शाकोत्सव ता. १३-१२-२०२४ से १७-१२-२०२४ तक मनाया गया था।

पाटोत्सव के अवसर पर ता. १३ डिसेम्बर से १७ दिसेम्बर तक श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण स.गु. महंत शा. स्वामी यज्ञप्रकाशदासजी (कलोल-जमीयतपुरा) के वक्तापद से हुई थी।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री ता. १७-१२-२०२४ के दिन पधारे थे। आपश्री के करकमलो द्वारा ठाकुरजी की अन्नकूट आरती और शाकोत्सव अच्छे से मनाया गया। पाटोत्सव के यजमान प.भ जगदीशभाई चिमनभाई पटेल - ह. प.भ. बिन्देशभाई जगदीशभाई और कथा के यजमान आनि. दिलीपभाई गोकलदास पटेल, अ.नि. भरतभाई गोकलदास पटेल - ह. धवलभाई आदि परिवार को आशीर्वाद देकर सम्मानित किये थे। सभा का सुंदर संचालन शा. स्वा. उत्तमचरणदासजी (कलोल) ने शोभा बढाया था । (कोठारीश्री ओला)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल (पंटवटी) सप्तम वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा तथा स.गु. शा. स्वामी गुरुप्रसाददासजी की प्रेरणा से तथा महंत शा.स्वा. यज्ञप्रकासदासजी (कलोल-जमीयतपुरा) पूरे सत्संग

समाज पंचवटी कलोल के प्रबन्ध से श्री स्वामिनारायण मुख्य मंदिर कलोल (पंचवटी) का सातवाँ पाटोत्सव ता. ९-१२-२०२४ के दिन उल्लास पूर्वक मनाया गया था।

स.गु. शा. स्वा. गोपालचरणदासजी ने सुंदर कथा का पान कराये थे। पाटोत्सव के मुख्य यजमान प.भ. बबाभाई चतुरभाई पटेल (उनावा), प.भ. शांताबेन बबाभाई पटेल - वर्त ह. प.भ. भावेशकुमार बबाभाई पटेल परिवारने सुदंर लाभ उठाये। ता. ९-१२-२०२४ के दिन प.पू. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । तथा आरती उतारकर सभी को आशीर्वाद दिये थे । (शा.स्वा. आनंदप्रकाशदासजी - कलोल सत्संग समाज)

गोमतीपुर मंदिर में धनर्मास की धुन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. महंत स्वामी सगु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से अपने गोमतीपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में धनुरमास मे सभी हरिभ्कत समूहमें श्री स्वामिनारायण धुन प्रातः ५ से ६ बजे तक करके श्रीहरि को प्रसन्न किये।(मुकेशभाई तथा सभी हरिभक्त)

नूतन निर्माणाधीन श्री स्वामिनारायण मंदिर दहेगाम रात्रीय श्री भागवत पंचान्ह पारायण - शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. महंत स्वामी सगु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा पूरे सत्संग समाज दहेगाम के तरफ से सुंदर प्रबन्ध से दहेगाम में प.पू. आचार्य महाराजश्री के संकल्प प्रेरणा से नूतन मंदिर के लिये अहमदाबाद मंदिर से जमीन संपादन होने के बाद नूतन मंदिर के भूमि के उपर ता. १८ से २२ दिसम्बर २०२४ के मध्य रात्रीय श्रीमद् भागवत पारायण स.गु. शा. स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी (कलोल-जमीयतपुरा) के वक्तापद से पूर्ण हुई।

ता. २२-१२-२०२४ के दिन प.पू. लालजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा कथा की पूर्णाहुति आरती और शाकोत्सव को बधार देकर आशीर्वाद दिये थे।(कोठारीश्री - दहेगाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर इसंड का दूसरा पाटोत्सव पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. महंत स्वामी सगु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर इसंड के दूसरे पाटोत्सव के उपलक्ष्य में ता. १५-१२-२०२४ से २१-१२-२०२४ तक श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण स.गु. शा. स्वा. सत्यसंकल्पदासजी (नारायणघाट महंतश्री) के वक्ता पदे से पूर्ण हुई। जिसके यजमान अ.नि. पटेल कांतिभाई प्रहलादभाई, गं.स्व. पूरीबेन कांतिभाई पटेल परिवार ने लाभ लिया था । इस अवसर पर पू. महंत स.गु. शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी पधारकर यजमान परिवार को आशीर्वाद दिये थे। तथा सेवा देने वालो की प्रशंसा किये थे। सभा का संचालन शा. स्वा. सत्यस्वरुपदासजीने सम्भाला था । (कोठारीश्री इसंड)

मेडजी का मुवाडा श्री स्वामिनारायण मंदिर का रजत जंयती महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से जेतलपुरधाम के पू. महंत स्वामी स.गु.शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, पू. स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर मेडजी का मुवाडा गाँव के २५ वर्ष पूरे होने पर रजत जयंती महोत्सव उल्लासपूर्वक मनाया गया था। रजत जयंती महोत्सव के उपलक्ष्य में रात्रीय कथा शा. स्वा. जनमगंलदासजीने सम्भाला था।

रजत जयंती महोत्सव के अवर पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। निज मंदिर में ठाकुरजी की आरती करके सभा को आशीर्वाद प्रदान किये थे। पूरे प्रसंग के यजमान प.भ. रमणभाई फुलाभाई पटेल परिवार था । (महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी - जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडल का शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से जेतलपुरधाम के पू. महंत स्वामी स.गु.शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, पू. स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा एवम् पू. स.गु. महंत स्वामी कृष्णप्रसाददासजी के सुंदर मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडल के हरिभक्तो की विशाल हाजिरी में ता. २१-१२-२०२४ के दिन भव्य शाकोत्सव मनाया गया था । इस सुंदर कार्यक्रम का प्रबन्ध बावला मंदिर के महंत शा. स्वामी भक्तिनंदनदासजीने किया था। प्रसंगोचित सभा में पू. महंत स्वामी कृष्णप्रसाददासजी, पू. ब्र. शा. हरिस्वरुपानंदसजी (ट्रस्टीश्री) हिम्मतनगर, पू. महंत स्वामी आदि संत मंडल कथा वार्ता का लाभ दिये थे। ट्रेट, सीतापुर देश और विरमगाम कालीयाणा देश के सभी हरिभक्त शाक्रोत्सव का लाभ लिये थे।(जनमंगल स्वामी - जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर शेर गाँव में १०५ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से जेतलपुरधाम के पू. महंत स्वामी स.गु.शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, पू. स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से पू. महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन मे श्री स्वामिनारायण मंदिर शेर

गाँव का १०५ वाँ पाटोत्सव दिनांक २२-१२-२०२४ के दिन उल्लासपूर्वक मनाया गया था । जेतलपुर से पू. महंत स्वामी आत्मप्रकासदासजी, जनमंगल स्वामी, हेमंत भगत आदि संत मंडल पधारकर श्रीहरिकृष्ण महाराज का अभिषेक करके सभा में कखा में श्रीहरि और धर्मकुल के महात्म को सुनाये थे । पाटोत्सव के यजमान प.भ. योगेशभाई को. पू. स्वामीने फूलहार से सन्मानित किये थे । यजमानश्रीने पूरे गाँव को प्रसाद का प्रबन्ध (भोजन) किये थे ।(शा. जनमंगल स्वामी - जेतलपुरधाम)

जेतलपुरधाम द्वारा सत्संग लक्षीय क्रिया-कलाप

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से जेतलपुरधाम के पू. महंत स्वामी स.गु.शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, पू. स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर द्वारा जेतलपुर के अर्न्तगत आने वालो गाँव ता. ५-१२-२४ महिजडा गाँव, ता. १६-१२-२४ को असलाली, ता. १९-१२-२४ को वसई गाँव, ता. ३१-१२-२४ को महिज गाँव में शा. जनमंगलदासजी तथा अक्षरप्रिय स्वामी आदि संतो ने कथा वार्ता लाभ देकर हरिभक्तो को खुश किये थे ।(प्रति मास के अन्तिम शनिवार को न्युनारोल में सत्संग सभा होती है । (महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी - जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर विरमगाम (परकोटा) का १११ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से जेतलपुरधाम के पू. महंत स्वामी स.गु.शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, पू. स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा तथा महंत स.गु. स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी के अच्छे मार्गदर्शन में श्री स्वामिनारायण मंदिर विरमगाम (परकोटा) का १११ वाँ पाटोत्सव मार्गशीर्ष सुद-५ ता. ६-१२-२०२४ के दिन उल्लासपूर्वक मनाया गया था । इस अवसर पर जेतलपुर धाम से महंत स.गु. स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी, ब्र.शा.स्वा. हरिस्वरुपानंदजी (ट्रस्टीश्री), स.गु. महंत शा. स्वा. भक्तिनंदनदासजी (बावला) आदि संत मंडल पधारकर ठाकरुजी की आरती उतारकर कथा वार्ता करके हरिभक्तो को खुश किये थे ।(शा. जनमंगल स्वामी - जेतलपुरधाम)

पवित्र धनुर्मास में श्री नरनारायणदेव के अधिकार के अर्न्तगत निर्मणाधीन श्री स्वामिनारायण मंदिर भाभर पंचान्ह पारायण - शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा अ.नि.पू.स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी की दिव्य प्रेरणा से तथा उसी प्रकार अहमदाबाद मंदिर पूज्य मंहत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी और पूज्य कोठारी शास्त्री स्वामी नारायणमुनिदासजी (कालुपुर) की प्रेरणा से बनासकांठा के भाभर गाँव में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल एवम् पूरे हरिभक्तो की और से पवित्र धनुर्मासमें श्री नरनारायणदेव के अधीन नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर के लाभ हेतु रात्रीय श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण स.गु. महंत स्वामी यज्ञप्रकाशदासजी (कलोल-जमीयतपुरा) के वक्ता पद से हजारो श्रोता श्रवण करके धन्य हुए । कथा के अर्न्तगत पोथीयात्रा, नूतन मंदिर का शिलान्यास मुहूर्त, शाकोत्सव, संत-पूजन श्रीकृष्ण जन्मोत्सव, रुक्मणी विवाह आदि कार्यक्रम उल्लास पूर्वक मनाया गया था । कथा पारायण के यजमान माधु नटवरभाई रुपसीभाई परिवारने लाभ लिया था । छोटे-बडे सभी भक्तो ने सेवा करके श्रीहरि की कृपा प्राप्त किये । पू. महंत स्वामी के करकमलो द्वारा नये मंदिर का शिलान्यास का कार्यक्रम उल्लास पूर्वक मनाया गया था । (श्री नरनारायणदेव युवक मंडल - भाभर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर धमासणा भाईयो के मंदिर का ७ वाँ और बहनो का दूसरा पाटोत्सव - पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा अ.नि. स.गु. शास्त्री स्वामी विष्णुप्रसाददासजी की दिव्य प्रेरणा से उसी प्रकार अहमदाबाद मंदिर के पूज्य महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के सुंदर मार्गदर्शन से तथा पू. स्वामीश्री जयप्रकाशदासजी (जे.पी. स्वामी) और श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के सुंदर आयोजन से श्रीहरि के प्रसादीभूत अलौकिक स.गु. गुरुचरणरतानंद स्वामी के जन्मभूमि वाले गाँव धमासणा श्री स्वामिनारायण मंदिर (भाईयो का) ७ वाँ पाटोत्सव बहनो के मंदिर का दूसरे पाटोत्सव के अर्न्तगत स.गु. निष्कुलानंद स्वामी कृत श्रीमद् पुरुषोत्तमप्रकाश पंचान्ह रात्रीय पारायण पू. स.गु. महंत शास्त्री स्वामी सत्यसंकल्पदासजी (नारायणघाट) गुरु स.गु. महंत शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के वक्ता पद से ता. २८-११-२४ से २-१२-२४ तक की गयी । पूरे पाटोत्सव कार्यक्रम के यजमान धर्मकुल के कृपापात्र सेवक सां. कमलाबा भगत के यजमान पद से की गयी । ता. २-१२-२०२४ के दिन प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे । और निज मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारकर सभा में बैठे हरिभक्तो को आशीर्वाद दिये थे । सभा का संचालन सत्यस्वरुपदासजीने अच्छे रुप से किया था । (कोठारीश्री धमासणा)

गांधीनगर से-२३ स्वामिनारायण मंदिर में हरिस्मरण पर्व मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा एवम् आशीर्वाद से पू. शास्त्री स्वामी श्रीहरिप्रियदासजी के मार्गदर्शन अनुसार पू. स.गु. शास्त्री स्वामी श्रीहरिकेशवदासजी के सत्संग सेवा की पुण्य स्मृति में से-२३,

स्वामिनारायण मंदिर में ता. २५-१२-२०२४ से ता. २९-१२-२०२४ तक हरिस्मरण का पर्व मनाया गया था।

इस अवसर पर ता. २२-१२-२०२४ से ''स्मरणम्'' प्रदर्शन का उद्घाटन किया गया। इसमे भक्तो द्वारा तैयार की गयी ५०० जितनी कलाकृतियो, श्री नरनारायणदेव दर्शन, नव महामंदिरो की प्रतिकृति तथा भगवान केदारनाथजी के दर्शन का लाभ हरिभक्त तथा आस पास के धर्मप्रेमी जनताने किया था। अगल-बगल के विदयालय के तीस हजार छात्र प्रभावित हुए थे।

इसके साथ ही पाँच दिन की सत्संगिभूषण शास्त्र की कथा महिला मंच, श्रीहरिपूजन - मारुतियज्ञ तथा हर प्रकार के रोज सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ स्वास्थ्य सेवा यज्ञ के तहत रक्तदान सेवा यज्ञ में ११५ बोतल रक्तदान किया गया था। ४०० रोगियो की ई.सी.जी. रिपोर्ट देखकर आवश्यक दवा विना मुल्य की दी गयी थी। कथा के वक्ता पद पर पू. हरिप्रियदासजी मधुर आवाज में कथामृत का पान कराये थे।

इस अवसर पर प.पू. १०८ लालजी महाराजश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू.ध.धु. १००८ आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा बहनो को लक्ष्मीस्वरुपा अखंड सौभाग्यवती प.पू. गादीवालाश्री पधारकर दर्शन एवम् आशीर्वाद प्रदान किये थे।

देश विदेश से हजारो हरिभक्त इस उत्सव में भाग लिये थे। धामो से अधिक संख्या में संत आये थे। सभा का संचालन बावला मंदिर के महंत शा. स्वामी भक्तिनंदनदासजीने किया था। इस प्रकार भगवान अंत संतो के नाम स्मरण के साथ हरि स्मरण पर्व मनाया गया था।(नारायण जानी)

बोपल श्री स्वामिनारायण मंदिर धनुर्मास धून-शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल परिवार के आशीर्वाद से अपने बोपल श्री स्वामिनारायण मंदिर के महंत स्वामी ध्यानप्रियदासजी की प्रेरणा से धनुर्मास में प्रातः घुन, कथावार्ता, भजन-कीर्तन और ता. २९-१२-२०२४ को भव्य शाकोत्सव मनाया गया था।(कोठारीश्री बोपल मंदिर)

मूली प्रदेश सत्संगस समाचार

रामगढ गाँव में श्री स्वामिनारायण मंदिर के रजत जयंती महोत्सव के उपलक्ष्य में श्रीमद् सत्संगिभूषण पारायण

मूलीधाम में विराजमान श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा एवम् प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री तता प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाश्री की मर्जी से तथा मूलीधाम के अ.नि.पू. स.गु. सा. स्वामी विज्ञानदासजी के दिव्य प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर रामगढ (भाईयो-बहनोका) रजत महोत्सव के उपलक्ष्य में ता. ४-१२-२०२४ से ८-१२-२०२४ तक श्रीमद् सत्संगिभूषण पंचान्ह पारायण पू. स.गु. शास्त्री स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी (चराडवा), पू.स.गु. शा. स्वामी सुव्रतस्वरुपदासजी (मूली) के वक्तापद से की गयी थी। महोत्सव के मुख्य यजमान पू. सां. छायाब, शिष्य ध्रुवीबेन (ह.अ.सौ. ललीताबेन रतिलालभाई पटेल) कथा पारायण के यजमान अ.सौ. मरघाबेन विठ्ठलभाई बरमोरा परिवारने लाभ लिया था।

ता. ४-१२-२४ के दिन प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे। आप के करकमलो द्वारा ठाकुरजी की आरती उतारी गयी। सभा में पधारकर सभी को आशीर्वाद दिये थए। बहनो को दर्शन और आशीर्वाद देने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री पधारे थे। इस अवसर पर मूलीधाम, अहमदाबाद, चारडवा, सुरेन्द्रनगर आदि धामो से संत पधारे थे। सभा का संचालन शा. स्वा. विश्ववल्लभदाजी (अम.) और शा. स्वा. ब्रह्मभूषणदासजी सम्भाले थे। पुरा गाँव कथा-वार्ता तथा धर्मकुल का द्रशन करके धन्यता अनुभव किये थे।(कोठारीश्री - रामगढ मंदिर)

श्रीहरि के चरण से पवित्र भूमि शियाणी मंदिर का २२ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

मूली धाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा एवम् धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा अ.नि. अखंडभजनानंदी पू.स.गु. स्वामी श्री प्रेमजीवनदासजी (मूलीधाम) संत मंडल, समस्त सत्संग समाज शियाणी के प्रबन्ध द्वारा १६-१२-२०२४ से २०-१२-२०२४ तक श्री स्वामिनारायण मंदिर शियाणी का २२ वाँ वार्षिक पाटोत्सव के अर्न्तगत श्रीहरि मंगल प्राण प्रति,ठा महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री भक्तचिंतामणी एवम् श्रीमद् भागवत कखा पू. स.गु. स्वामी सत्संग सागरदासजी (मूलीधाम), पू. स.गु. शा. स्वा. दिप्यप्रकासदासजी (चारडवा महंतश्री) के वक्ता पद से हुई। महोत्सव के मुख्य यजमान अ.नि. अंबारामभाई छगनभई मोटका, अ.नि. गोदावरीबेन अंबारामभाई मोटका परिवार रहा था। पाटोत्सव के यजमान अ.नि. रम्भाबेन रामजीभाई पटेल, अ.नि. हीराबेन घनश्यामभाई पटेल परिवारने लाभ लिया था।

पूरे प्रसंग के आयोजक मार्गदर्शक पू. स.गु. स्वा. श्रीकृष्णवल्लभदासजी थे। सभा का संचालन शा. स्वा. विश्वल्लभदासजी ने किया था। ता. २०-१२-२०२४ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स्वामी आदि संत-पार्षद मंडल के साथ पधारे थे। निज मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारकर गाँव के श्रीराम मंदिर में आरती उतारे थे। इसके बाद पूरे गाँव वालो को सभा में आशीर्वाद प्रदान किये थे।(कोठारीश्री शियाणी)

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

आसो सुद-१ प.भ. ईलाबेन रामजीभाई सोलंकी (गढपुर) । **आसो सुद-२** प.भ. बिन्दुबेन - सोनलबेन (अमदावाद), प.भ. देव हेमंतभाई पटेल (मोटेरा), प.भ. प्रेरक मेहुलकुमार पटेल (चांदखेडा) । **आसो सुद-३** प.भ. प्रद्दयुमन हालाई (भुज-कच्छ) । **आसो सुद-४** प.भ. जयेश बाबुभाई पटेल (अमदावाद), प.भ. दिपेश अशोकभाई पटेल (धमासणा), प.भ. ध्रुविल घनश्यामभाई पटेल (धमासणा), प.भ. अवध निरव दिनेशभाई पटेल (अमदावाद) । **आसो सुद-४** प.भ. मावजी लालजी वेकरीया (कच्छ-भुज), प.भ. रतिभाई ईश्वरभाई पटेल (अमदावाद) । **आसो सुद-५** प.भ. मावजी लालजी वेकरीया (कच्छ-भुज), प.भ. मधुबेन रावजीभाई पटेल (झुंडाल) । **आसो सुद-६** प.भ. मावजी लालजी वेकरीया (कच्छ), सांख्ययोगी कांताबेन रूडा हालाई (सुरजपर-कच्छ), सांख्ययोगी कांताबेन परबत (नारायणपर-कच्छ) । **आसो सुद-७** प.भ. मावजी लालजी वेकरीया (कच्छ), क्लीन ग्रीन क्युब एन्ड लोजीस्टीक प्रा.ली. (अमदावाद), प.भ. हरजी प्रेमजी केराई (मांडवी-कच्छ), प.भ.अ.नि. विरजी विसराम राबडीया (मांडवी-कच्छ), प.भ. अमरबाई प्रेमजी हालाई (मांडवी-कच्छ), प.भ. कल्याण लक्ष्मण हालाई (मांडवी-कच्छ) । **आसो सुद-८** प.भ. आकाशभाई विष्णुभाई चौधरी (ईश्वरपुरा), प.भ.अ.नि. घनश्यामभाई कांतिलाल शाह (अमदावाद), प.भ. प्रविणभाई पटेल (सडलावाला-अमदावाद) । **आसो सुद-९** प.भ.अ.नि. महंत कानबाई केसरा जेसाणी (बलदीया-कच्छ), प.भ. हरिकृष्णसिंह तेजेन्द्रसिंह राणा (नवा नरोडा) । **आसो सुद-१०** प.भ. भीमजी मनजी राबडीया परिवार (भुज-कच्छ), प.भ. नगीनदास कांतिभाई राणा (अमदावाद) । **आसो सुद-११** सांख्ययोगी राधाबाई रूडा (सुरजपर-कच्छ) । **आसो सुद-१२/१३** प.भ. ताराबेन जगदीशभाई पटेल (मोखासण), प.भ. कानजी लालजी वेकरीया (मांडवी-कच्छ), प.भ. दिनेशभाई हरगोविंदभाई पटेल (अमदावाद), प.भ. हरिभाई महादेवभाई सिंधव (वणी), प.भ. कांतिभाई मुरजी मेपाणी (सुखपर-कच्छ), प.भ. शालिन अरविंदभाई रवजीभाई दोंगा (बापुनगर), प.भ. भरतभाई दलसंगभाई चौधरी, प.भ. शैलेषभाई भावसार (सरसपुर), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारायणपर-कच्छ) । **आसो सुद-१४** प.भ.अ.नि. प्रेमबाई मनजी वाघजीयाणी (सुखपर-कच्छ). **आसो सुद-१५** प.भ.अ.नि. वल्लभभाई पोपटलाल खीचडीया (अमदावाद), प.भ. वदनभाई अरजणभाई राठोड (सुरत) ।

आसो वद-१ प.भ. वालबाई हरजी वेकरीया (सुरजपर-कच्छ), प.भ. मंजुलाबेन जयंतीभाई पटेल (कडी), चांदनी गोपी मंडल (अमदावाद), अ.नि.पू. स.गु. पुराणी स्वामी हरिकृष्णदासजीनी त्रयोदशा निमित्ते (गढपुर) । **आसो वद-२** प.भ. वालजी लालजी वेकरीया (पियावा मांडवी-कच्छ), प.भ. अरविंदभाई त्रिकमदास पटेल (करजीसण), प.भ. जीज्ञेशभाई ठक्कर (अमदावाद) । **आसो वद-३/४** प.भ.अ.नि. लालभाई शंकरभाई पटेल (धमासणा), प.भ. अश्विनभाई प्रभुदास पटेल (अमदावाद) । **आसो वद-५** प.भ. संदिपभाई शेठ परिवार (अमदावाद), प.भ.अ.नि. वाघजीभाई माधवभाई पटेल (वडदला) । **आसो वद-६** प.भ. विनोदभाई काला यात्रा संघ (रामपर-वेकरा-कच्छ), प.भ.अ.नि. धनबाई भीमजी कारा (दहींसरा-कच्छ), प.भ. निमेषभाई कालुभाई पटेल (हठीपुरा-पोरडा), प.भ. राधाबाई केसरा हिरजी हालाई (दहींसरा-कच्छ) । **आसो वद-७** प.भ. राधाबेन दिनेशभाई पटेल (बापुनगर), प.भ.अ.नि. चंपाबेन मणीलाल पटेल (अमदावाद) । **आसो वद-८** प.भ. घनश्यामभाई ठक्कर (गांधीधाम-कच्छ), प.भ.अ.नि. दिवाबेन भीखाभाई पटेल (सापावाडा), प.भ. लालजीभाई हरदासभाई दुधात (निकोल) । **आसो वद-१०/११** प.भ. बावचंदभाई रवजीभाई तथा हंसाबेन दोंगा परिवार (अमदावाद), प.भ. हरिशभाई वरसाणी (माधापर-कच्छ), प.भ. मधुसुदनभाई मूलजीभाई पटेल (खंडेरावपुरा), प.भ. देवेनभाई मनजीभाई पटेल (अमदावाद) । **आसो वद-१२** प.भ. मनजीभाई कल्याण हिराणी (सुखपर-कच्छ), प.भ.अ.नि. धनजी रामजी राबडीया, प.भ.अ.नि. पायलबेन भावेशकुमार पटेल (पलीयड), प.भ. शैलेषभाई भावसार (अमदावाद), प.भ. विपुलभाई जोगाणी (सुरत), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारायणपर-कच्छ) । **आसो वद-१३** प.भ. आनंदीबेन हर्षदराय जोबनपुत्रा (गांधीनगर), प.भ.अ.नि. खीमजीभाई नारणभाई राबडीया (रामपर-कच्छ), प.भ. धिरज धनजी राबडीया (कच्छ), प.भ. प्रीति निकेश महेता (अमदावाद), प.भ. अ.नि. पोपटभाई वाघजीभाई सावलीया (निकोल) । **आसो वद-१४** प.भ. हिरजी धनजी केराई (नारायणपर-कच्छ) । **आसो वद-३०** प.भ. रूक्ष्मणीबेन जसवंतभाई दलवाडी (अमदावाद), प.भ. हितेषभाई शांतिभाई प्रजापति.

सभी हरिभक्तो के लिये सूचना

विश्व का सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण महा मंदिर अहमदाबाद कालुपुर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से हरिभक्तो की मनोकामना संकल्पो की मूर्ति के लिये कोई हरिभक्त, किसी दिन भी ठाकुरजी को ध्वजा चढा सकता है । उसी प्रकार आप को अपने परिवार की महापूजा-गौदान, गौपूजन, रसोई पूरा करना, शैयादान आदि संकल्प भगवान के वाधा वस्त्रो को बनवाना आदि मे अपने सम्प्रदाय के संविधान के अनुसार विधि की जाती है ।

मार्गशीर्ष सुद-१५ (पूर्णिमा) सत्संग सभा तथा संत-हरिभक्त की रसोई तथा ध्वजा के यजमानश्री

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की खुशी के लिये पूरे धर्मकुल की खुशी से अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स्वामी की प्रेरणा से मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष पूनम की सत्संग सभा ठाकुरजी का थाल संत हरिभक्तो के रसोई के यजमान अ.नि. कनुभाई मंगलदास पटेल परिवार, गंस्व. भगवतीबेन कनुभाई पटेल, वर्त. निकुंजभाई कनुभाई पटेल, कामिनभाई कनुभाई पटेल, श्लोक, जीशान - गाँव सोजा (माणसा) साईसं सीटी अहमदाबाद ।

Printed and Published by **Shastri Swami Purushottamprakashdasji** on behalf of **Shree Swaminarayan Temple** and **Published From :** Shree Swaminarayan Mandir Kalupur, Ahmedabad-380001. Printed at **Asian Printery**, Near Talati Hall, Raipur, Ahmedabad-380001.
Editor : Shastri Swami Purushottamprakashdasji

गांधीनगर से-२ मंदिर के रजत जयंती के अवसर पर ठाकुरजी की आरती उतारते प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री।

गांधीनगर से-२३ मंदिर में हरिस्मरण पर्व महोत्सव में आचार्य महाराजश्री की आरती उतारते संत-हरिभक्त तथा सभा में आशीर्वाद देते प.पू. लालजी महाराजश्री।

इसंड मंदिर के पाटोत्सव के अवसर पर शाकोत्सव मनाते प.पू. आचार्य महाराजश्री।

शियाणी (मूली प्रदेश) मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते हुए, प.पू. आचार्य महाराजश्री।

कलोल (पंचवटी) मंदिर के पाटोत्सव अवसर पर सभा में आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2024-2026
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2026

नैरोबी आफ्रिका मंदिर के रजत जयंती के अवसर पर श्री घनश्याम महाराज की मूर्ति प्रतिष्ठा करते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

नैरोबी ई.एस.एस. आफ्रिका मंदिर के रजत जयंती के अवसर पर शाकोत्सव का वघार करते प.पू. बड़े महाराजश्री ।

लंगाटा (नैरोबी) मंदिर में श्री घनश्याम महाराज की आरती उतारते प.पू. आचार्य महारजश्री ।

मोम्बासा (आफ्रिका) मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारते और सभा को आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

Praful Kharsani